सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुरभि

27 वां अंक

अक्टूबर 2025 - मार्च 2026

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) का कार्यालय

ओडिशा, भुवनेश्वर

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2025

सुरभि पत्रिका परिवार

परामर्शदाता समिति

श्री सुबु आर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

श्री भरत चंद्र बेहेरा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री भरत चंद्र बेहेरा
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

उप संपादक

श्री उपेन्द्र नाथ दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सह संपादक

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक
श्री संजीव कुमार यादव
वरिष्ठ अनुवादक
श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

गणतंत्र दिवस 2026 की झलकियां

संदेश

श्री सुबु आर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 27वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है। इसके लिए पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारीगण/कर्मचारीगण प्रशंसा के पात्र हैं।

हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा एवं मनोभावों को प्रकट करने का उत्तम मंच भी प्रदान करती है। पूर्व अंकों की भांति पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी के विकास तथा हिंदी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है।

हिंदी पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रकाशित करती है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि 'सुरभि' का यह अंक भी पूर्व अंकों की भांति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति जागरूकता विकसित करेगा एवं कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण बनाने में सफल होगा। पत्रिका का यह अंक पाठकों के ज्ञानवर्धन में भी सहायक होगा।

पत्रिका 'सुरभि' के सफल एवं निरंतर प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(सुबु आर)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री भरत चंद्र बेहेरा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका के रूप में अर्ध-वार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के 27वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है। पत्रिका के सभी सदस्यों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार में विभागीय पत्रिकाएं सदैव महत्वपूर्ण योगदान देती हैं तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए एक सार्थक वातावरण बनाने में सहायक होती है। मुझे आशा है कि हिंदी पत्रिका 'सुरभि' अपने उदेश्य में पूर्णतया सफल रहेगी।

यह हम सब की नैतिक जिम्मेदारी, संवैधानिक दायित्व एवं कर्तव्य है कि हम सब मिलकर कार्यालय के काम काज में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की प्रवृत्ति को विकसित करके राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास एवं उत्थान में योगदान दें।

मुझे विश्वास है कि पूर्व अंकों की भांति हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का यह अंक भी कार्यालय में होने वालें समस्त हिंदी कार्यकलापों के स्पष्ट प्रतिबिंब तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विचारों, भावनाओं एवं सृजनात्मक प्रतिभा के रूप में सामने आएगा।

मैं कामना करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगतिशील रहकर राजभाषा के प्रचार- प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी एवं पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी।

'सुरभि' के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(भरत चंद्र बेहेरा)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री बनोत राकेश नाईक

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- I)

राजभाषा हिंदी को समर्पित कार्यालय की गृह पत्रिका 'सुरभि' के 27वें अंक का प्रकाशन इस कार्यालय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु कार्यालय के कार्मिकों द्वारा किये जा रहे प्रयासों में सहायक सिद्ध होगी।

कार्यालयीन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी भावनाएं, अनुभव, मनोभाव, विचारों, कलात्मक अभिव्यक्ति हेतु एक मंच तो प्राप्त होता ही है साथ ही यह कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने हेतु एक अच्छा प्रयास भी है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सपादक मंडल एवं रचनाकारों के अथक प्रयासों एवं हिंदी के प्रति प्रेम की हार्दिक प्रशंसा करता हूँ। साथ ही कामना करता हूँ कि यह पत्रिका निर्बाध रूप से सदैव ही राजभाषा हिंदी की सेवा में पूर्णरूपेण समर्पित रहे।

पत्रिका के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

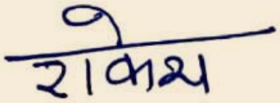

(बनोत राकेश नाईक)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- I)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री विमलेश कुमार

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- III)

कार्यालयीन गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 27वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी सृजन क्षमता, अपनी प्रतिभा और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने समर्पण को प्रेम पूर्वक दर्शाया है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों के कार्मिकों में कार्यालयीन काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि करने हेतु, कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करने में कार्यालयीन गृह हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ विविधता भाषा- वैविध्य में भी परिलक्षित होती है। हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में विविधता में एकता को चरितार्थ करती है । संपर्क भाषा के रूप में हिंदी विभिन्न राज्यों के निवासियों के बीच संचार सेतु का कार्य कर रही है।

कार्यालयीन पत्रिका 'सुरभि' में हिंदी में रचित लेख, कहानियां, कविताएँ आदि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए किए जा रहे प्रयासों को सार्थक एवं मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

मैं पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल, सभी रचनाकारों एवं पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े कार्यालय के सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

(विमलेश कुमार)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- III)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I),

ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री नल्लमोतु बालकृष्णा

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- IV)

कार्यालयीन अर्धवार्षिक गृह हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 27वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है। पूर्व अंकों की भांति इस अंक में भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनकी राजभाषा हिंदी में बढ़ती रूचि और प्रेम को कहानी, कविता और लेख के माध्यम से प्रेमपूर्वक दर्शाया है एवं अपने साहित्यिक चिंतन एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यक्त किया है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं का हमेशा से अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य कार्यालय के कार्मिकों में सृजनात्मक क्षमता का विकास तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति एक सकारात्मक वातावरण तैयार करना है। कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'सुरभि' विगत कई वर्षों से इस महत्वपूर्ण कार्य में निर्बाध योगदान देती आ रही है।

मैं पत्रिका के पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ कि आपके शुभकामना संदेशों ने निरंतर पत्रिका के सफल संपादन का मार्ग प्रशस्त किया है। मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

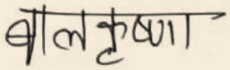

(नल्लमोतु बालकृष्णा)

उप महालेखाकार (ए.एम.जी- IV)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, गॉर्टन कैसल
शिमला - 171 003

Office of the Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh,
Gorton Castle, Shimla-171 003

सं.रा.भा.अ./ले.प./बाह्यपत्रिका/I/1231431/2025 दिनांक: 11-12-2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय:- कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'सुरभि' के 26वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। इस अंक में प्रकाशित लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

Digitally signed by
Om Prakash Doi
Date: 11-12-2025
09:23:21
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: +91-177-2652607

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली–110002

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

सं.प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2025-26/ 81 दिनांक 18.12.2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
ओडिशा,
भुवनेश्वर- 751001

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुरभि" 26वें अंक की ई-प्रति का प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्रीमती मीनाक्षी आचार्य,पर्यवेक्षक की "श्रीजगन्नाथ धाम पुरी और कुछ दर्शनीय मंदिरों के दर्शन" एवं श्रीमती ममता देवी, सहायक पर्यवेक्षक की "सबका साथ सबका विकास" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को नव इन्द्रप्रस्थ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं.प्र.म.ले.(ले.व ह.)/हि.प्र/हि.क./पत्रिका समीक्षा/2025-26/176 दिनांक- 14.11.2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
सचिवालय मार्ग, ओड़िशा, भुवनेश्वर- 751001

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "सुरभि" के 26वें अंक की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "सुरभि" के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रीमती ममता देवी की रचना "सबका साथ सबका विकास", श्री विमलेश कुमार की रचना "बंधुआ मजदूरों का पुनर्जन्म", श्रीमती मीनाक्षी आचार्य की रचना "चिड़िया" एवं श्री राहुल कुमार वर्मा की रचना "विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरती हिंदी" प्रशंसनीय है।

हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

TEL : 2535 5406, FAX : (044) 2533 0775
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण रेलवे, पार्क टाउन, चेन्नै - 600 003.
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
SOUTHERN RAILWAY, PARK TOWN,
CHENNAI - 600 003.

सं:एसए/हिंदी पत्रिका/2025 1976 दिनांक: 14.11.2025

सेवा में,
वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय
ओडिशा, भुवनेश्वर-751001

विषय - अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'सुरभि के 26वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'सुरभि के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका अति मनोरम व आकर्षक है । पत्रिका में श्रीमती मीनाक्षी आचार्य की 'चिड़िया', श्रीमती नीलम देवी की 'कर्म की उपादेयता' और श्रीमती शादमा जहीन की 'सम्मान के दो किनारे' अत्यंत प्रभावशाली, वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुकूल एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री सिद्धार्थ गिरि की 'हिंदी से ही हर सवेरा है' में अपनी भाषा के प्रति अपार प्रेम को दर्शाया गया है। संक्षेप में कहे तो संपूर्ण पत्रिका उत्कृष्ट है। पत्रिका के कुशल संपादन व प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को अनेक शुभकामनाएं।

भवदीय

G V SURYA PRABHA
Digitally signed by G V SURYA PRABHA
Date: 2025.11.14 15:24:55 +05'30'
सहायक निदेशक(राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	वंदे भारत	श्री विमलेश कुमार	1
2	ई-ऑफिस का 'मायाजाल' और हमारे 'कागजी' संस्कार	श्री किशोर कुमार बेहेरा	2
3	ओडिशा के नए पर्यटन स्थल: उभरता हुआ आकर्षण	श्री सूर्यमणि प्रधान	4
4	नई कार्य परिस्थिति में लेखापरीक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका	श्री प्रज्ञामय देवदत्त दास	5
5	हमें थोड़ा खेलने दो	श्री आदित्यांशु महापात्र	6
6	पकड़ो नहीं बहने दो, जिंदगी नदी है, किनारा नहीं	सुश्री अक्षु चहल	7
7	भारत को आगे बढ़ाने में युवा शक्ति की भूमिका	श्री अभिषेक कुमार	8
8	भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में 5S सिद्धांत का कार्यान्वयन	श्री सय्यद शैबान फैज़ल	9
9	मानव धर्म ही सर्वोपरि	श्रीमती प्रज्ञा पारमिता दास	11
10	मेरी पहली हवाई यात्रा : सपनों से वायनाड तक	सुश्री तनुश्री दास	12
11	विश्व शांति में भारत की भूमिका	श्री आलोक कुमार	14
12	शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह	श्री राहुल कुमार वर्मा	15
13	सीख: रामायण के कुछ प्रमुख पात्रों से	श्री श्रवण कुमार यादव	18
14	भारतीय महिला क्रिकेट: नई उड़ान, नई संभावना को सलाम	श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्रा	21
15	दलखाई: पश्चिमी ओडिशा की एक अनूठी लोक परंपरा	श्री अमित कुमार प्रधान	23
16	झारखंड – मेरी मिट्टी, मेरी पहचान	श्री राजा केशरी	27
17	ओडिशा की कला	श्री रश्मि रंजन सामंतराय	28
18	दक्षिण ओडिशा की गोद में: आस्था और प्रकृति का एक अविस्मरणीय सफर	श्री नरेंद्र दास	29

19	आपस में प्रेम सबसे बड़ा है	श्री आशीष सतपथी	32
20	ऑडिटर का जीवन	श्री सुब्रत कुमार घड़ई	32
21	जगन्नाथ सबके हैं	स्व. कुमार महापात्र	33
22	मेरा नृत्य ओडिशी	सुश्री आश्रिता महापात्र	33
23	अस्मिता, विचार और अज्ञान का द्वंद्व	श्रीमती तृप्तिमाई बारिक	34
24	विद्यार्थी और मोबाइल	श्री साई आशीष दास	35
25	किस पर विश्वास करें	श्री आसिस कुमार बारिक	35
26	मेरे पापा	सुश्री दिग्दर्शिनी मिश्रा	36
27	हमारे ऑफिस का प्यारा बगीचा	सुश्री आंचल	36
28	यह जिंदगी बहुत मुश्किल है लेकिन मैं आगे बढ़ता रहूँगा	श्री सलमान टुडू	37
29	कोरापुट से चित्रकूट तक (मित्रों संग यात्रा-काव्य)	श्री सोनुपु सत्यनारायण	38
30	राष्ट्र-चिंतन	श्री संजीव कुमार यादव	40
31	रामस्वामी वैरामुथु : शब्दों के जादूगर और आधुनिक तमिल साहित्य के शिल्पकार	श्रीमती रानी गिरि	42

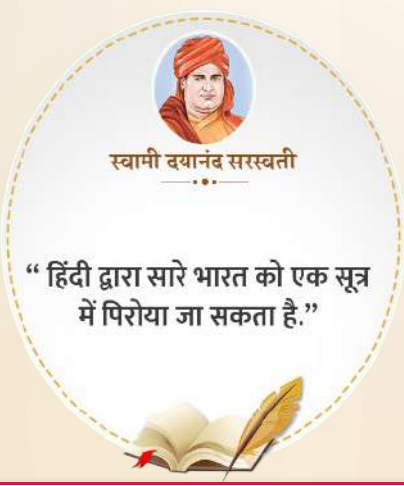

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है ।

वंदे भारत

श्री विमलेश कुमार

उप महालेखाकार

भारत देश महान है,
बोले सारा जहान है।
पहाड़ नदी जंगल हो
या हो राजस्थान का मरूस्थल
दक्षिण का सागर या हो या
उत्तर में खड़ा हिमालय महान हो।
यहाँ की मिट्टी में खूशबू है
गंगा-यमुना का पवित्र जल और
यहाँ की अद्भुत ऋतुएँ महान है।
यहाँ की सनातन संस्कृति और सभ्यता महान है।

वेद-पुराण और सर्वधर्म समभाव भी महान है,
संस्कार और मानवता की सीख हो
या हो यहाँ की नैतिकता, महान है।
सारा विश्व कुटुम्ब परिवार
ये मान्यता महान है
जाति भेद नहीं प्रांत भेद नहीं
सत्कर्म की शिक्षा महान है।
भारत देश महान है
वंदे भारत का उद्घोष महान है।

ई-ऑफिस का 'मायाजाल' और हमारे 'कागजी' संस्कार

श्री किशोर कुमार बेहेरा
लेखापरीक्षक

Disclaimer (अस्वीकरण): "यह लेख केवल हास्य और जागरूकता के उद्देश्य से है, इसका उद्देश्य किसी की आलोचना करना नहीं है

हम सब आधुनिक लोग हैं। हमारे पास लाखों रुपये के कंप्यूटर हैं, हाई-स्पीड इंटरनेट है, और 'ई-ऑफिस' (e-Office) जैसा क्रांतिकारी सिस्टम भी है। लेकिन हमारे दफ्तर में तकनीक और परंपरा का ऐसा अद्भुत संगम (Fusion) देखने को मिलता है, जो शायद सिलिकॉन वैली के वैज्ञानिकों को भी चक्कर में डाल दे।

ई-ऑफिस या ई-टाइपराइटर?

हमारे यहाँ काम 'ई-ऑफिस' पर शुरू होता है। हम बड़ी शिद्दत से कंप्यूटर पर ड्राफ्ट बनाते हैं, नोटिंग लिखते हैं, और फिर... फिर हम माउस के उस जादुई बटन को दबाते हैं जिसे 'Print' कहते हैं! क्योंकि हमें लगता है कि जो बात कंप्यूटर की स्क्रीन पर है, वो 'झूठी' है; सत्य तो केवल कागज पर है। ई-ऑफिस का उद्देश्य था 'Paperless' होना, लेकिन हमने इसे 'Paper-more' बना दिया है। पहले हम सीधे फाइल पर लिखते थे, अब हम पहले कंप्यूटर पर लिखते हैं, फिर उसका प्रिंट निकालते हैं, और फिर उसे फिजिकल फाइल में नत्थी करते हैं।

सर्कुलर' की शाही सवारी और व्हाट्सएप:

सबसे दिलचस्प नजारा तब होता है जब एडमिन सेक्शन से कोई 'सर्कुलर' (Circular) या 'ऑर्डर' निकलता है। आज के जमाने में, जब हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति को एक सेकंड में मेल या व्हाट्सएप कर सकते हैं, हमारे ऑफिस का सर्कुलर आज भी 'पैदल यात्रा' पर निकलता है। सारे कर्मचारी एक-दूसरे से डिजिटल जुड़े हैं, सबके पास स्मार्टफोन है, लेकिन वह आदेश एक चपरासी (MTS) के हाथ में 'प्यून-बुक' (Peon Book) के जरिए हर टेबल पर जाता है। हम उस पर साइन करते हैं—"Received"—और फिर वह कागज रद्दी का हिस्सा बन जाता है। जो काम एक 'क्लिक' में हो सकता था, उसके लिए कागज, समय और जूते—तीनों घिसते हैं।

रिप्रेजेंटेशन:'

मैं एडमिन सेक्शन में हूँ, जहाँ कर्मचारियों के लाभ (Benefits) के काम होते हैं। यहाँ एक अजीब डर का माहौल है। हमारे साथी अपने छोटे से 'रिप्रेजेंटेशन' (Representation) को देने के लिए भी A4 साइज के दो पन्ने खराब करके ही लाते हैं। पता नहीं क्यों? शायद —भरोसा नहीं है! उन्हें लगता है कि अगर ई-मेल या ई-ऑफिस के जरिए अर्जी भेजी, तो शायद वह 'साइबर स्पेस' (Cyber Space) के किसी ब्लैक होल में कहीं खो जाएगी। जब तक कागज पर 'Receiving' की मुहर न लगे, उन्हें लगता है कि अर्जी दी ही नहीं गई। विडंबना देखिए, जो लोग बाहर 'डिजिटल इंडिया' की बात करते हैं, ऑफिस के अंदर उन्हें एक ई-मेल पर भरोसा नहीं होता।

'Select All' वाली दुर्घटनाएं और मुफ्त का कागज

प्रिंटर के साथ हमारा रिश्ता भी अजीब है। कभी-कभी हमें चाहिए होता है सिर्फ एक पन्ना, लेकिन जल्दबाजी में प्रिंट रेंज (Range) सेलेक्ट करना भूल जाते हैं। नतीजा? मशीन धड़ाधड़ 50 पन्ने उगल देती है! और हमारा तर्क क्या होता है? "अरे, अपना क्या लग रहा है? ऑफिस का ही तो जा रहा है!" हम भूल जाते हैं कि 'ऑफिस का जाना' मतलब देश के संसाधनों का जाना है।

निष्कर्ष: सब जानते हैं, पर बदलना कौन चाहता है?

हम सब यहाँ सुशिक्षित (Well-educated) लोग हैं। एडमिन में बैठकर मैं रोज देखता हूँ कि कैसे लाखों रुपये के सिस्टम लगे होने के बावजूद रद्दी की टोकरियाँ कागजों से भरती जा रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग पर हम सब लंबी बहस कर सकते हैं, लेकिन अपने ही डेस्क पर हो रहे पेपर वेस्ट (Waste) पर खामोश रहते हैं।

सच तो यह है कि हमें पता सब है। हमें पता है कि यह तरीका गलत है, पुराना है और पर्यावरण विरोधी है। लेकिन शायद हम इस पुराने 'ढांचे' (Structure) के इतने आदी हो चुके हैं कि हम अपनी सुविधा के दायरे से बाहर आना ही नहीं चाहते। बदलाव तकनीक में तो आ गया है, कंप्यूटर स्क्रीन पर भी आ गया है, लेकिन हमारी मानसिकता (Mindset) में वह 'अपडेट' आना अभी बाकी है।

सवाल यह नहीं है कि हम कागज बचाना नहीं जानते, सवाल यह है कि—**क्या हम वाकई इस पुराने ढांचे को बदलना चाहते हैं?** दोस्तों, यह 21वीं सदी है। पेड़ हमें ऑक्सीजन देने के लिए हैं, फाइलों में दबने के लिए नहीं। आइए, अपने 'कागजी संस्कारों' को थोड़ा बदलें। जब सिस्टम डिजिटल है, तो भरोसा भी डिजिटल ही रखें।

ओडिशा के नए पर्यटन स्थल: उभरता हुआ आकर्षण

श्री सूर्यमणि प्रधान
सहायक पर्यवेक्षक

पूर्वी भारत का रत्न कहलाने वाला ओडिशा राज्य अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। परंपरागत रूप से पुरी, कोणार्क और भुवनेश्वर जैसे स्थल पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण रहे हैं, किंतु हाल के वर्षों में राज्य सरकार द्वारा विकसित किए गए कई नए पर्यटन स्थल ओडिशा की पहचान को एक नया आयाम प्रदान कर रहे हैं।

ओडिशा के नए पर्यटन स्थलों में हिराकुंड इको-टूरिज्म ज़ोन, देवमाली पहाड़ियाँ, सतकोसिया टाइगर रिज़र्व का विस्तारित क्षेत्र, और देओधर जलप्रपात विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये स्थल न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं, बल्कि साहसिक एवं पर्यावरणीय पर्यटन को भी बढ़ावा देते हैं। देवमाली पहाड़ियाँ, जो राज्य की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला मानी जाती हैं, ट्रैकिंग और प्रकृति प्रेमियों के लिए एक नया आकर्षण बनकर उभरी हैं।

राज्य के तटीय क्षेत्र में रामचंडी–चंद्रभागा समुद्र तट का विकास तथा बैतरणी और ब्राह्मणी नदी तट पर्यटन परियोजनाएँ भी पर्यटकों को आकर्षित कर रही हैं। यहाँ प्राकृतिक शांति के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली को नज़दीक से देखने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई आदिवासी बहुल क्षेत्रों को पर्यटन मानचित्र पर शामिल किया गया है, जिससे स्थानीय समुदायों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

ओडिशा सरकार द्वारा विकसित इको-रिट्रीट परियोजनाएँ, विशेष रूप से हिरेन, सतकोसिया और पुरी के समीप, आधुनिक सुविधाओं के साथ प्रकृति के समीप ठहरने का अनूठा अनुभव प्रदान करती हैं। इन परियोजनाओं ने राज्य को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर नई पहचान दिलाई है।

पर्यटन अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण, बेहतर सड़क संपर्क, डिजिटल प्रचार तथा स्थानीय हस्तशिल्प एवं खान-पान को प्रोत्साहन देने के प्रयासों से ओडिशा एक उभरते पर्यटन गंतव्य के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है।

निष्कर्षतः, ओडिशा के नए पर्यटन स्थल राज्य की आर्थिक वृद्धि, सांस्कृतिक संरक्षण और सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आने वाले वर्षों में ये स्थल ओडिशा को भारत के प्रमुख पर्यटन राज्यों की श्रेणी में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होंगे।

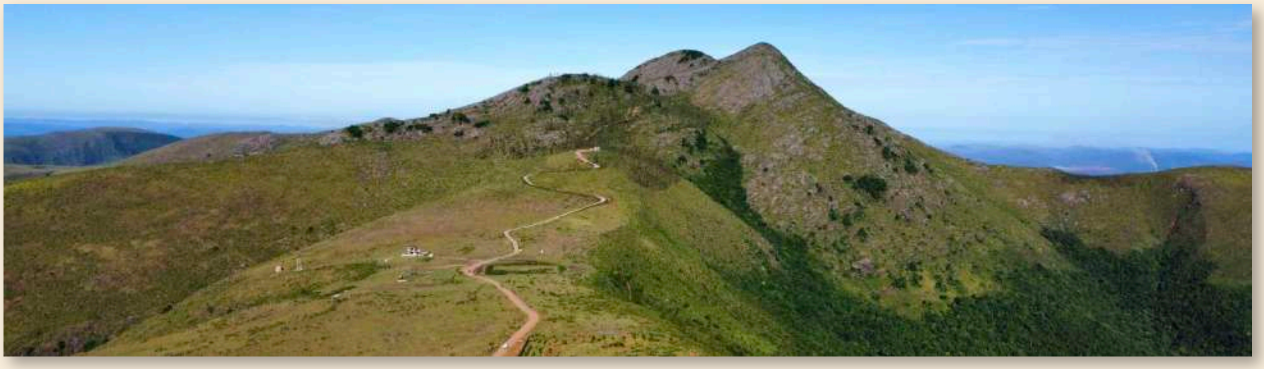

नई कार्य परिस्थिति में लेखापरीक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

श्री प्रज्ञामय देवदत्त दास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

डिजिटल परिवर्तन के इस दौर में सरकारी तथा निजी संगठनों की कार्यप्रणालियाँ तेजी से डेटा-केंद्रित होती जा रही हैं। विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से उत्पन्न विशाल मात्रा के आँकड़ों ने प्रबंधन और निगरानी की प्रक्रियाओं को अधिक जटिल बना दिया है। पारंपरिक लेखापरीक्षा पद्धतियाँ, जो मुख्यतः सीमित नमूना परीक्षण पर आधारित होती हैं, इन जटिलताओं को प्रभावी रूप से संबोधित करने में प्रायः सक्षम नहीं रह गई हैं। ऐसे परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एक ऐसे तकनीकी माध्यम के रूप में सामने आई है, जो लेखापरीक्षा की दक्षता, पारदर्शिता तथा प्रभावशीलता को नई दिशा प्रदान कर सकती है। यह लेख बदलती कार्यपरिस्थिति में लेखापरीक्षा के क्षेत्र में AI की उपयोगिता पर प्रकाश डालता है।

लेखापरीक्षा का मूल उद्देश्य सार्वजनिक संसाधनों के उपयोग में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और वित्तीय अनुशासन को सुनिश्चित करना है। वर्तमान समय में ई-गवर्नेंस, डिजिटल भुगतान प्रणालियों तथा इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड-प्रबंधन के व्यापक प्रसार ने लेखापरीक्षा के स्वरूप को मूल रूप से परिवर्तित कर दिया है। इस डिजिटल परिवेश में पारंपरिक विधियों की सीमाएँ स्पष्ट रूप से सामने आने लगी हैं, जिसके परिणामस्वरूप AI आधारित तकनीकों की आवश्यकता और प्रासंगिकता में निरंतर वृद्धि हो रही है।

AI आधारित प्रणालियाँ बड़े और जटिल डेटा समूहों का गहन विश्लेषण करने में सक्षम होती हैं, जिससे लेखापरीक्षा की व्यापकता और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार संभव हो पाता है। ये प्रणालियाँ केवल चयनित नमूनों तक सीमित न रहकर संपूर्ण डेटा का परीक्षण कर सकती हैं। मशीन लर्निंग और उन्नत एल्गोरिदम की सहायता से लेन-देन में छिपे पैटर्न, प्रवृत्तियों तथा असामान्य गतिविधियों की पहचान की जाती है, जो सामान्य मानवीय निरीक्षण में अक्सर दृष्टिगोचर नहीं हो पातीं। इसके साथ ही, ऐतिहासिक डेटा के आधार पर संभावित जोखिम क्षेत्रों का पूर्वानुमान लगाना भी संभव हो जाता है, जिससे जोखिम आधारित लेखापरीक्षा अधिक प्रभावी बनती है। इस प्रकार AI आधारित विश्लेषण लेखापरीक्षा को अधिक वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ और परिणामोन्मुख बनाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से संपूर्ण डेटा का परीक्षण संभव हो पाता है, जिससे समय की बचत होती है और मानवीय त्रुटियों की संभावना में भी कमी आती है। विशेष रूप से जोखिम आधारित लेखापरीक्षा के संदर्भ में AI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उच्च जोखिम वाले लेन-देन और क्षेत्रों को प्राथमिकता के आधार पर चिह्नित करने में सहायक सिद्ध होती है।

इसके अतिरिक्त, AI आधारित प्रणालियाँ नियमों से विचलित लेन-देन, असामान्य संशोधनों तथा संदिग्ध गतिविधियों का स्वतः विश्लेषण कर संभावित धोखाधड़ी की पहचान प्रारंभिक चरण में ही कर सकती हैं। इससे निवारक लेखापरीक्षा को बढ़ावा मिलता है और वित्तीय अनियमितताओं पर समय रहते नियंत्रण संभव हो पाता है।

हालाँकि, AI के उपयोग के साथ एल्गोरिदम की पारदर्शिता तथा मानवीय विवेक की भूमिका को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। लेखापरीक्षा की प्रक्रिया केवल तकनीकी निष्कर्षों तक सीमित न रहकर पेशेवर निर्णय, नैतिक मूल्यों और संस्थागत उत्तरदायित्व से संतुलित होनी चाहिए। AI आधारित प्रणालियाँ प्रभावी सहायक उपकरण के रूप में कार्य करती हैं, किंतु

अंतिम निष्कर्ष और निर्णय मानव ऑडिटर के अनुभव, विवेक और संदर्भगत समझ पर ही निर्भर रहने चाहिए। इस संतुलन के अभाव में तकनीकी पक्षपात, त्रुटिपूर्ण निष्कर्ष या जवाबदेही से जुड़ी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो नई कार्यपरिस्थिति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता लेखापरीक्षा की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उपयुक्त नीतिगत ढाँचे, पर्याप्त प्रशिक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग के माध्यम से AI का समावेश भविष्य की लेखापरीक्षा को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और उत्तरदायी बना सकता है।

हमें थोड़ा खेलने दो

श्री आदित्यांशु महापात्र

पुत्र- श्री अमरेंद्र महापात्र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

किताबें कहतीं—पढ़ते जाओ,
घड़ी कहे—अब आगे बढ़ जाओ।
होमवर्क, परीक्षा, हर दिन बोझ,
सपनों पर पड़ता जाता रोज़।
माँ कहे—पहले काम पूरा,
पापा कहें—भविष्य है अधूरा।
पर नन्हें दिल की है ये पुकार,
थोड़ा खेल भी है ज़रूरी यार।
धूप में दौड़ें, मिट्टी छुएँ,
हँसी के संग सब दुःख धुलें।

खेल से मिलता बल और ज्ञान,
खेल ही सिखाए जीवन-ज्ञान।
थक जाता मन, रुक जाता सोच,
जब न मिले खेलने का रोष।
हम बच्चे हैं, मशीन नहीं,
खेल बिना जीवन रंगीन नहीं।
पढ़ने देंगे, वादा है पूरा,
बस खेलने दो—थोड़ा-सा पूरा।

पकड़ो नहीं बहने दो, जिंदगी नदी है, किनारा नहीं

सुश्री अक्षु चहल
लेखापरीक्षक

जीवन हमेशा बदलता रहता है। कभी खुशी मिलती है, कभी दुख, कभी सफलता, तो कभी असफलता। इसलिए कहा गया है—"पकड़ो नहीं बहने दो, जिंदगी नदी है, किनारा नहीं।" इस विचार का मतलब है कि जीवन को रोककर नहीं जिया जा सकता। जैसे नदी लगातार बहती रहती है, वैसे ही हमें भी आगे बढ़ते रहना चाहिए।

नदी कभी एक जगह नहीं रुकती। वह पहाड़ों, जंगलों और मैदानों से गुजरते हुए अपना रास्ता बनाती रहती है। रास्ते में उसे पत्थर भी मिलते हैं और गहरी जगहें भी, लेकिन वह रुकती नहीं। जीवन भी ऐसा ही है। हमें भी कठिनाइयों से डरकर रुकना नहीं चाहिए, बल्कि उनसे सीखकर आगे बढ़ना चाहिए।

यह विचार कहीं भी इंसान को मेहनत या योजना बनाने से नहीं रोकता। जीवन में लक्ष्य बनाना, योजना करना और पूरी मेहनत से काम करना बहुत जरूरी है। लेकिन कभी कभी ऐसा होता है कि पूरी कोशिश और सही योजना के बावजूद परिस्थितियाँ हमारे अनुसार नहीं चलतीं। ऐसे समय में यह सोच हमें सिखाती है कि निराश होने के बजाय स्थिति को स्वीकार करें और नए रास्ते खोजते हुए आगे बढ़ें। यही जीवन का असली प्रवाह है।

किनारा स्थिरता का प्रतीक है। अगर नदी किनारे से चिपक जाए, तो वह बह ही नहीं पाएगी। उसी तरह अगर हम हमेशा सुरक्षित और आसान रास्ता ही चुनते रहें, तो हम नए अनुभव नहीं कर पाएँगे। जीवन में आगे बढ़ने के लिए बदलाव को अपनाना जरूरी है।

बहने देने का मतलब यह नहीं कि हम जिम्मेदारियों से भाग जाएँ। इसका मतलब है कि हम हर परिस्थिति को समझदारी से स्वीकार करें और अपने मन को हल्का रखें। जब हम जीवन को मजबूती से पकड़ने की कोशिश छोड़ देते हैं, तब हम ज्यादा खुश और शांत महसूस करते हैं।

अंत में, यह विचार हमें सिखाता है कि जीवन को नदी की तरह बहने देना चाहिए। मेहनत और योजना के साथ आगे बढ़ते हुए, परिस्थितियों को स्वीकार करना और बदलाव को अपनाना ही जीवन को सुंदर और सफल बनाता है।

भारत को आगे बढ़ाने में युवा शक्ति की भूमिका

श्री अभिषेक कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत विश्व के सबसे युवा देशों में से एक है। देश की बड़ी जनसंख्या युवा वर्ग की होने के कारण युवा शक्ति भारत की सबसे बड़ी पूँजी मानी जाती है। राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी विकास में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी ऊर्जा, रचनात्मकता और नवीन सोच भारत को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने की क्षमता रखती है।

शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में युवाओं की सक्रिय भागीदारी देश की उत्पादकता को बढ़ाती है। तकनीक, स्टार्ट-अप, नवाचार और डिजिटल इंडिया जैसे क्षेत्रों में युवाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रभावी प्रदर्शन किया है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने में युवा उद्यमियों और प्रशिक्षित कार्यबल का योगदान निर्णायक सिद्ध हो रहा है।

सामाजिक परिवर्तन में भी युवा शक्ति की भूमिका उल्लेखनीय है। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता जैसे अभियानों में युवाओं की भागीदारी समाज को सकारात्मक दिशा देती है। लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में युवाओं की राजनीतिक जागरूकता और सक्रिय सहभागिता भी आवश्यक है।

खेल, विज्ञान, कला और संस्कृति के क्षेत्र में भारतीय युवाओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन किया है। अनुशासन, मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत को आगे ले जा रहे हैं।

युवा शक्ति भारत के भविष्य की आधारशिला है। उचित मार्गदर्शन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अवसर प्रदान करके यदि युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा दी जाए, तो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य अवश्य प्राप्त किया जा सकता है।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में 5S सिद्धांत का कार्यान्वयन

श्री सय्यद शैबान फैज़ल

लेखापरीक्षक

1. परिचय (Introduction)

5S एक कार्यस्थल संगठन प्रणाली है जो जापान में टोयोटा प्रोडक्शन सिस्टम (टीपीएस) के हिस्से के रूप में विकसित किया गया था। इसके प्रमुख औपचारिकरण और लोकप्रियता का श्रेय 1980 के दशक में हिरोयुकी हिरानो को जाता है, हालांकि इसी तरह के संगठनात्मक विचार पहले से मौजूद थे। यह कार्यस्थल संगठन प्रणाली, दक्षता में सुधार और अपव्यय को समाप्त करने के लिए छँटनी (Sort - Seiri), सुव्यवस्था (Set in Order - Seiton), स्वच्छता (Shine - Seiso), मानकीकरण (Standardize – Seiketsu) और निरंतरता (Sustain - Shitsuke) पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य कार्यक्षेत्र को व्यवस्थित, स्वच्छ और कुशल बनाना है।

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा जैसे विभाग में, जहाँ फाइलों का अंबार, महत्वपूर्ण दस्तावेज और सख्त समय-सीमा (Deadlines) होती हैं, 5S का पालन करने से ऑडिट रिपोर्टिंग की गुणवत्ता में सुधार होता है और अनावश्यक विलंब कम होता है। यह केवल साफ-सफाई नहीं, बल्कि एक 'कार्य संस्कृति' है।

2. योजना (Planning)

इस योजना के कार्यान्वयन से पहले एक स्पष्ट रणनीति आवश्यक है:

a) 5S समिति का गठन: प्रत्येक अनुभाग (जैसे: सभी ले.प्र.स., प्रशासन, कार्यालय स्थापना या कार्यालय प्रबंधन) में एक 'नोडल अधिकारी' नियुक्त करें।

b) क्षेत्र का निर्धारण: प्राथमिकता के आधार पर उन क्षेत्रों को चुनें जहाँ फाइलों का दबाव सबसे अधिक है (जैसे- रिकॉर्ड रूम या समन्वय सेक्शन)।

c) प्रशिक्षण : अधिकारियों और कर्मचारियों को 5S के लाभों और उनकी भूमिका के बारे में शिक्षित करना।

d) वर्तमान स्थिति का आकलन: मौजूदा कार्यप्रणाली की फोटो लेना या 'वेस्ट ऑडिट' करना ताकि बाद में तुलना की जा सके।

3. कार्यान्वयन (Implementation) - पांच चरण

a) छँटनी (Sort - Seiri)

» कार्रवाई: ऑडिट फाइलों, वाउचरों और पुराने दस्तावेजों की पहचान करें।

» भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में उपयोग: जो दस्तावेज अब आवश्यक नहीं हैं या जिनकी प्रतिधारण अवधि (Retention Period) समाप्त हो गई है, उन्हें अलग करें और इसे उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार नष्ट करने के लिए पुराने रिकॉर्ड अनुभाग को सौंप दें।

» 'रेड टैग' (Red Tag) प्रणाली का उपयोग करें—जिस फाइल की जरूरत संदिग्ध हो, उसे एक निश्चित स्थान पर रखें; यदि निर्धारित समय सीमा तक उपयोग न हो, तो उसे आर्काइव या नष्ट कर दें।

» निरीक्षण रिपोर्टों, मसौदा अनुच्छेदों और प्रमुख दस्तावेजों के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया का पालन करें।

b) सुव्यवस्था (Set in Order - Seiton)

» कार्रवाई: "हर चीज के लिए एक जगह और हर चीज अपनी जगह पर" नियम का कड़ाई से पालन करें

» भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में उपयोग: फाइलों के लिए कलर-कोडिंग का उपयोग करें (जैसे: समन्वय के फाइलों के लिए पीला, तकनीकी फाइलों के लिए लाल, प्रशासनिक फाइलों के लिए हरा इत्यादि)।

» डिजिटल फाइलों के लिए एक मानक 'नामकरण पद्धति' (Naming Convention) अपनाएं ताकि किसी भी 'ड्राफ्ट पैरा' या निरीक्षण रिपोर्टों को खोजने में 30 सेकंड से अधिक समय न लगे।

c) स्वच्छता (Shine - Seiso)

» कार्रवाई: कार्यस्थल और उपकरणों की दैनिक सफाई।

» सभी डिजिटल संपत्तियों का नियमित आधार पर की सुरक्षा जांच और रखरखाव करें

» IA&AD में उपयोग: कंप्यूटर, प्रिंटर और स्कैनिंग मशीनों को धूल मुक्त रखें। पुराने 'बस्ते' और अलमारियों की नियमित जांच करें ताकि दस्तावेज कीड़ों, कृंतक आक्रमण या नमी से खराब न हों।

d) मानकीकरण (Standardize - Seiketsu)

» कार्रवाई: पहले तीन चरणों को नियम बनाएं और इसे निरंतरता से पालन करें।

» भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में उपयोग: एक 'मानक संचालन प्रक्रिया' (SOP) तैयार करें। उदाहरण के लिए: "प्रत्येक शुक्रवार शाम को डेस्क की सफाई" या "डिजिटल सर्वर पर फाइलों को सहेजने का एक समान तरीका"। इसके लिए चेकलिस्ट का उपयोग करें।

» मानक परिचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के पालन के संबंध में सभी विभागों का आवधिक आंतरिक निरीक्षण करें।

e) अनुशासन / निरंतरता (Sustain - Shitsuke)

» कार्रवाई: नियमित '5S ऑडिट' लागू करें

» क्रॉस-टीम ऑडिट: एक टीम दूसरी टीम के डिजिटल और फिजिकल वर्कस्पेस का निरीक्षण करें।

» चेकलिस्ट का उपयोग: स्कोरिंग के लिए एक 5S स्कोरकार्ड का उपयोग करें ताकि प्रगति को डेटा के रूप में देखा जा सके।

» 5S डैशबोर्ड: टीमों के स्कोर को एक साझा डैशबोर्ड पर दिखाएं ताकि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनी रहे।

» फोटो साक्ष्य: "पहले" और "बाद" की तस्वीरें (जैसे साफ डेस्क या व्यवस्थित ड्राइव) लगाएं ताकि बदलाव का असर दिखे।

» प्रशिक्षण: नए शामिल होने वाले ऑडिटर्स को पहले दिन से ही 5S नियमों के बारे में सिखाएं।

» KPI से जोड़ें: 5S के पालन को वार्षिक निष्पादन समीक्षा (Appraisal) का हिस्सा बनाएं।

» भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में उपयोग: समय-समय पर '5S ऑडिट' करें। सबसे स्वच्छ और व्यवस्थित अनुभाग को 'मासिक पुरस्कार' देकर प्रोत्साहित करें। इसे केवल एक बार का काम न समझकर विभाग की कार्यप्रणाली का हिस्सा बनाएं।

4. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग में 5S सिद्धांत को लागू करने से न केवल कार्यालय का वातावरण बेहतर होगा, बल्कि यह "लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा" (Dedicated to Truth in Public Interest) के हमारे आदर्श वाक्य को और मजबूती देगा। जब फाइलों और आंकड़ों का प्रबंधन व्यवस्थित होता है, तो ऑडिट की सटीकता बढ़ती है और संस्थान की विश्वसनीयता में वृद्धि होती है। यह डिजिटल इंडिया और 'ई-ऑफिस' (e-Office) के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

मानव धर्म ही सर्वोपरि

श्रीमती प्रज्ञा पारमिता दास

पत्नी- श्री प्रज्ञामय देवदत्त दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल किसी एक धर्म, पंथ या संप्रदाय का पालन करना नहीं है, बल्कि मानवता का विकास और संरक्षण करना है। जब मनुष्य मनुष्य के प्रति करुणा, प्रेम, सत्य और न्याय का व्यवहार करता है, तभी वह सच्चे अर्थों में धार्मिक कहलाता है। इसी विचार को "मानव धर्म" कहा जाता है, जिसे सभी प्रमुख धर्मग्रंथों ने अपने-अपने ढंग से सर्वोच्च स्थान दिया है।

वेदों में यह भाव मिलता है कि समस्त सृष्टि एक ही चेतना से जुड़ी हुई है। जब मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, तब वह किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। उपनिषद "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना के माध्यम से पूरे विश्व को एक परिवार मानने की शिक्षा देते हैं। यह विचार मानव धर्म की नींव है, जहाँ हर व्यक्ति दूसरे के सुख-दुःख को अपना मानता है।

भगवत गीता में कर्म को धर्म का आधार बताया गया है। गीता यह सिखाती है कि बिना स्वार्थ के, कर्तव्य भावना से किया गया कर्म ही सच्चा धर्म है। यहाँ धर्म का अर्थ पूजा-पाठ तक सीमित न होकर, जीवन में सही आचरण अपनाने से है। सत्य, अहिंसा और समभाव—ये सभी मानव धर्म के आवश्यक तत्व हैं।

बाइबिल प्रेम और क्षमा को सबसे बड़ा गुण मानती है। वह सिखाती है कि दूसरों के प्रति दया और प्रेम का व्यवहार ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। इसी प्रकार कुरान मानव जीवन की पवित्रता पर बल देता है और यह संदेश देता है कि एक निर्दोष व्यक्ति की रक्षा करना सम्पूर्ण मानवता की रक्षा के समान है। यह विचार स्पष्ट करता है कि मानव धर्म किसी भी धार्मिक सीमा से ऊपर है।

आधुनिक युग में श्री श्री ठाकुर अनुकूलचंद्र ने मानव धर्म को जीवनोपयोगी और व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार धर्म वही है जो जीवन को आगे बढ़ाए, व्यक्ति और समाज दोनों के लिए कल्याणकारी हो। उन्होंने ऐसे आचरण पर ज़ोर दिया जो व्यक्ति को जिम्मेदार, संवेदनशील और उपयोगी नागरिक बनाए।

आज जब संसार में धर्म, जाति और भाषा के नाम पर मतभेद बढ़ रहे हैं, तब मानव धर्म का महत्व और भी बढ़ जाता है। भूखे को भोजन देना, अशिक्षित को ज्ञान देना, कमजोर की रक्षा करना और सत्य के मार्ग पर चलना—यही सभी धर्मों का साझा संदेश है।

वेद, उपनिषद, गीता, बाइबिल, कुरान और श्री श्री ठाकुर अनुकूलचंद्र सभी एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं—मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं। जब मनुष्य मनुष्य के लिए जीना सीख लेता है, तभी सच्चे धर्म की स्थापना होती है।

मेरी पहली हवाई यात्रा : सपनों से वायनाड तक

सुश्री तनुश्री दास
लेखापरीक्षक

कुछ यात्राएँ केवल स्थान बदलने के लिए नहीं होती, वो हमें अंदर से भी बदल देती है, मेरी पहली हवाई यात्रा भी मेरे जीवन का ऐसा ही अनुभव रही, यह यात्रा केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं थी, बल्कि यह मेरी आत्मनिर्भरता की पहली उड़ान, दोस्ती की गहराई और खुद पर विश्वास की कहानी थी। सबसे खास बात यह थी कि यह पूरी यात्रा मैंने अपने कमाए हुए पैसों से, अपनी सबसे अच्छी दोस्त शिल्पा के साथ, केरल के खूबसूरत स्थान वायनाड के लिए की थी।

हवाई जहाज में बैठना बचपन से ही मेरे लिए एक सपना रहा था। आसमान में उड़ते जहाज को देखकर हमेशा यही लगता था कि काश एक दिन मैं भी इसमें बैठ सकूँ। जब वह सपना सच होने वाला था, तो मन में उत्साह के साथ-साथ थोड़ी घबराहट भी थी। एयरपोर्ट पर कदम रखते ही ऐसा लगा जैसे मैं किसी दूसरी ही दुनियां में आ गई हूँ चमकती रौशनी अनुशासित व्यवस्था, अंजान चेहरे और लगातार घोषणाएं।

जब मैंने अपना बोर्डिंग पास हाथ में लिया, तो उस छोटे से कागज के टुकड़े में मुझे अपनी मेहनत, संघर्ष और आत्मनिर्भर बनने की कहानी दिखाई दे रही थी। यह पहली बार था जब मैं किसी यात्रा पर अपने पैसों से जा रही थी। यह अहसास मुझे अंदर तक गर्व से भर रहा था।

मेरी दोस्त शिल्पा इस पूरे सफर में मेरे साथ थी। उसकी मौजूदगी ने मेरी इस घबराहट को उत्साह में बदल दिया। हम दोनों एक-दुसरे की ख़ुशी को महसूस कर रहीं थी। जैसे ही फ्लाइट ने उड़ान भरी, दिल की धड़कने तेज हो गई। खिड़की से नीचे झांकते हुए जमीन धीरे- धीरे छोटी होने लगी और बादल पास आने लगे, तो मुझे लगा जैसे मैं सच में जिंदगी के एक नये स्तर पर पहुँच रही हूँ।

केरल पहुँचते ही हवा में एक अलग ही ताजगी महसूस हुई। वहां की नमी, हरयाली और शांत वातावरण ने तुरंत मन को सुकून दे दिया। एयरपोर्ट से वायनाड तक का सफर भी अपने आप में बहुत सुंदर था रास्ते में पहाड़ जंगल छोटे- छोटे गाँव दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यहाँ की प्रकृति बहुत सरल और सच्ची है।

होटल पहुंचकर थोड़ी देर आराम करने के बाद हम आसपास टहलने निकल गए। शाम की ठंडी हवा और पहाड़ो की खामोशी ने पहले ही दिन वायनाड को अपना बना दिया था।

दुसरे दिन की सुबह मेरे जीवन की सबसे सुंदर सुबहों में से एक थी। होटल की बालकनी में से चाय की चुस्की लेते हुए पहाड़ो को निहारना मानो मन को स्थिर कर रहा था।

दुसरे दिन की सुबह मेरे जीवन की सबसे सुंदर सुबहों में से एक थी। होटल की बालकनी में से चाय की चुस्की लेते हुए पहाड़ो को निहारना मानो मन को स्थिर कर रहा था।

उस दिन हमने निकलते ही सबसे पहले जिपलाइन का मजा लिया। दो पहाड़ो के बीचो-बीच से होकर फिर हम चले गए चारो तरफ पहाड़ो से घिरे हुई एक विशाल जलराशी बानासागर डैम के पास। वहां से लौटते वक्त हमने एक छोटा सा मसाले का बगीचा देखा। इसके बाद हम लंच करने चले गए। केले के पत्ते पर परोसा गया स्वादिष्ट भोजन और उसका अनोखा स्वाद मुझे आज भी याद है। वहां से फिर हम चले गए आदिवासी गाँव देखने यह एक पहाड़ के ऊपर बना हुआ था जो कुछ फिल्मों में दिखने वाले

दृश्य से कम नहीं था। वहां हम कुछ समय बैठे रहे और यह महसूस किया कि असली खुशी दिखावे में नहीं बल्कि सादगी में होती है। शाम को हम कॉफ़ी के बागानों में घूमकर वापस होटल आ गए।

तीसरे दिन की शुरुआत थोड़ी जल्दी हुई। हम एडक्कल गुफाएं देखने के लिए निकल चुके थे। वहां पहुँचने में थोडा वक्त जरुर लगा था। उसे चढ़ने में हम बहुत ज्यादा थक गए थे। लेकिन उस गुफा की खूबसूरती देखकर हमारी थकान चली गई। हमें बहुत अच्छा महसूस हुआ। वापसी के समय हमने फेंटम रॉक देखा। दूर से यह विशाल चट्टान किसी मानव चेहरे की आकृति की दिखाई देती है जिस कारण से इसे फेंटम रॉक कहा जाता है। यह प्रकृति की एक अनमोल कला थी। इसके बाद हम पहुँचे लक्कीडी व्यू पॉइंट। यहाँ से दिखाई देने वाले घुमावदार रास्ते घने जंगल और बादलों से ढकी पहाड़ियां किसी चित्र की तरह लग रही थी। ठंडी हवा चहरे को छू रही थी और मैं कहीं खोई जा रही थी। दिन के अंत में हम पहुँचे पुकुड झील जो हमारे होटल के बहुत नजदीक था। वहां पहुचते ही हमारी मुलाकात एक बंगाली परिवार से हुई फिर उनसे थोड़ी बातचीत के बाद झील के किनारे में बैठकर स्पीकर पर गाना सुन रहे थे। उस शाम लौटते समय मेरे मन में एक अजीब सी तृप्ति थी।

यात्रा के अंतिम दिन मन में मिले जुले भाव लेकर आई थी। खुशी इस बात की थी कि हमने वायनाड को दिल भरकर जिया था और उदासी इस बात की थी कि हमें वायनाड को अलविदा कहना पड़ेगा। नाश्ते के बाद हम कुरुवा द्वीप निकल गए वहां अलग ही कुछ जादू सा छाया हुआ था चारो और फैले घने पेड, शांत बहता पानी मन को पूरी तरह से सुकून दे रहा था। वहां से लौटते समय सीधे बस स्टैंड जाना था लेकिन बस कुछ देर से आने वाली थी। वह प्रतीक्षा हमारे लिए बोझ नहीं बनी, बस स्टैंड पर बैठे-बैठे शिल्पा और मैंने जिंदगी की बहुत सी बातें की। घंटो तक हँसी मजाक, भविष्य के सपने और बीते संघर्षों की चर्चा इन सबने हमारी दोस्ती को और गहरा बना दिया।

कुछ समय बाद हम एयरपोर्ट पहुँचे और वहां से भुवनेश्वर के लिए फ्लाइट पकड़ी। केरल से विदा लेते हुए मन थोडा सा भारी था लेकिन दिल संतुष्ट था। अब मेरे भीतर एक नया आत्मविश्वास, एक नई स्पष्टता और अपने दम पर आगे बढ़ने की ताकत थी।

विश्व शांति में भारत की भूमिका

श्री आलोक कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विश्वशांति मानव सभ्यता की सबसे बड़ी आवश्यकता रही है और इस दिशा में भारत की भूमिका ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल से ही भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को अपनाया है, जिसका अर्थ है—संपूर्ण विश्व एक परिवार है। यह विचार भारत की विदेश नीति और वैश्विक दृष्टिकोण की आधारशिला रहा है।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद अंतरराष्ट्रीय मंचों पर शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व का समर्थन किया। भारत ने उपनिवेशवाद, नस्लभेद और आक्रामकता का विरोध करते हुए संवाद और कूटनीति को प्राथमिकता दी। अहिंसा और सत्य के सिद्धांत, जिनका प्रचार महात्मा गांधी ने किया, आज भी विश्व को शांति का मार्ग दिखाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति अभियानों में भारत की भागीदारी उल्लेखनीय रही है। भारत विश्व के उन देशों में शामिल है जिन्होंने सबसे अधिक शांति सैनिक विभिन्न संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में भेजे हैं। इन अभियानों के माध्यम से भारत ने युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में स्थिरता, मानवीय सहायता और विश्वास बहाली में अहम योगदान दिया है।

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति ने शीत युद्ध के दौर में विश्व को संतुलन प्रदान किया। भारत ने किसी भी शक्ति गुट का हिस्सा बने बिना स्वतंत्र और शांतिपूर्ण विदेश नीति अपनाई। वर्तमान समय में भी भारत आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक सहयोग, परमाणु निरस्त्रीकरण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की वकालत करता रहा है।

इसके अतिरिक्त, भारत मानवीय सहायता, आपदा राहत, विकास सहयोग और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में भी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। योग, बुद्ध के शांति संदेश और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारत "सॉफ्ट पावर" के रूप में भी विश्वशांति को बढ़ावा दे रहा है।

निष्कर्षतः, भारत की भूमिका केवल राजनीतिक या कूटनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय भी है। संवाद, सहयोग और अहिंसा के मूल्यों पर आधारित भारत का दृष्टिकोण आज के अशांत विश्व में शांति की एक सशक्त आशा प्रस्तुत करता है।

शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

संक्षिप्त परिचय:

भारत के गौरव, शहीद-ए- आजम भगत सिंह जी को कौन नहीं जानता। वें महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और 23 मार्च, 1931 को लाहौर जेल में अपने साथियों सुखदेव और राजगुरु के साथ फांसी पर चढ़कर देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उन्होंने लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे के साथ सेंट्रल असेंबली में बम फेंककर क्रांति की मशाल जलाई, जिससे वे भारत के युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गए।

पारिवारिक पृष्ठभूमि:

शहीद-ए- आजम भगत सिंह जी का जन्म 28 सितंबर, 1907 को ब्रिटिश भारत में पंजाब के लायलपुर जिले के छोटे से गाँव बंगा में हुआ था। यह अब पाकिस्तान में है। इनकी माता का नाम श्रीमती विद्यावती और पिता का नाम श्री किशन सिंह था। उनका परिवार शुरू से ही क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ा था। उनके पिता सरदार किशन सिंह और चाचा सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे और अंग्रेजो के खिलाफ आंदोलनों के कारण जेल भी गए थे।

प्रेरणा के मुख्य स्रोत:

भगत सिंह को बचपन में क्रांतिकारी बनने की प्रेरणा मुख्य रूप से अपने देशभक्त परिवार से मिली थी। विशेष रूप से वे अपने चाचा सरदार अजीत सिंह से बहुत प्रभावित थे जिन्होंने "पगड़ी संभाल जट्टा" आन्दोलन भी चलाया था। ये मुख्य रूप से किसान आंदोलन और ग़दर आंदोलनों में भाग लिया जिसके लिए अंग्रेजो द्वारा इनको मांडले जेल भेजा गया। इसके अलावा जलियांवाला बाग हत्याकांड के खौफनाक मंजर और उस समय की अन्य राष्ट्रीय घटनाओं ने उनमे अत्याचार के खिलाफ लड़ने और अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध क्रान्ति की भावना उत्पन्न हुई। भगत सिंह के परिवार में क्रांतिकारी साहित्य का समग्र संग्रह था जिसे उन्होंने बचपन से ही पढ़ना शुरू कर दिया था। वे 19 वर्षीय युवा क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा को अपना गुरु मानते थे तथा उनकी तस्वीर सदा अपनी जेब में रखते थे। ये भगत सिंह जी के प्रेरणा स्रोत थे।

शिक्षा :

भगत सिंह ने अपने गाँव बंगा के स्कूल से अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की, फिर वे लाहौर चले गए और लाहौर के दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल (डी.ए.वी) से अपनी विद्यालयी शिक्षा पूर्ण की। विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करने के बाद 1923 में उन्होंने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज में दाखिला लिया जहाँ उनका परिचय क्रांतिकारी विचारों से हुआ। लेकिन असहयोग आन्दोलन के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ दी।

भगत सिंह केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि एक समाजवादी विचारक भी थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और श्रमिकों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई।

विचारों में परिवर्तन :

उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गए। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? वर्ष 1922 में चौरी-चौरा हत्याकांड के बाद गाँधी जी

ने जब किसानों का साथ नहीं दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका अहिंसा से विश्वास कमजोर हो गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र रास्ता है। उसके बाद वह चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर दल के हिस्सा बन गए। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 04 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

क्रांतिकारी गतिविधियां:

भगत सिंह केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि एक समाजवादी विचारक भी थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और श्रमिकों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के माध्यम से अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाया और बाद में नौजवान भारत सभा का गठन किया। 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। लाला लाजपत राय की लाठीचार्ज के दौरान हुई मृत्यु का बदला लेने के लिए एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्कॉट को मारने की योजना सोची। सोची गई योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गए जैसे कि वो ख़राब हो गई हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गए। उधर चन्द्रशेखर आज़ाद पास के डी.ए.बी स्कूल की चहारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे। 7 दिसंबर 1928 को करीब सवा चार बजे, ए.एस.पी सॉण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिससे वह पहले ही मर जाता। लेकिन तुरन्त बाद भगत सिंह ने भी 3-4 गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तज़ाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आज़ाद ने उसे सावधान किया - "आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।" नहीं मानने पर आज़ाद ने उसे गोली मार दी और वो वहीं पर मर गया। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया। उन्होंने अपने क्रांतिकारी साथी राजगुरु और सुखदेव के साथ मिलकर ब्रिटिश पुलिस अधिकारी सॉन्डर्स की हत्या कर दी। इसके बाद ब्रिटिश सरकार के दमनकारी कानूनों (पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट बिल) का विरोध करने के लिए 8 अप्रैल 1929 को अपने एक साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ केंद्रीय विधानसभा (सेंट्रल असेंबली) में बम फेंका, जिसका उदेश्य किसी की जान लेना नहीं, बल्कि बहरी ब्रिटिश सरकार को जगाना था। सेंट्रल असेंबली में बम फेंककर उन्होंने भागने के स्थान पर आत्मसमर्पण कर दिया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल का जीवन :

जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहते थे। जेल में रहते हुए भी उनका अध्ययन लगातार जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहें एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेज़ी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था, मैं नास्तिक क्यों हूँ? (Why I am an Atheist?) जेल में रहते हुए उन्होंने भारतीय कैदियों के हक व अधिकार के लिए 64 दिन की लंबी भूख हड़ताल की । उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

बलिदान :

दिनांक 6 अगस्त, 1930 को अदालत ने भगत सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 और 6एफ तथा आईपीसी की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध किया। 7 अक्तूबर, 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनाए जाने के साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बाद भगत सिंह की फाँसी की माफी के लिए अपील दायर की गई परन्तु यह अपील 10 जनवरी, 1931 को रद्द कर दी गई। इसके बाद तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय ने वायसराय के सामने सजा माफी के लिए 14 फरवरी, 1931 को अपील दायर की कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए मानवता के आधार पर फांसी की सजा माफ कर दें। भगत सिंह की फाँसी की सज़ा माफ़ करवाने हेतु महात्मा गाँधी ने 17 फरवरी 1931 को वायसराय से बात की फिर 18 फरवरी, 1931 को आम जनता की ओर से भी वायसराय के सामने विभिन्न तर्कों के साथ सजा माफी के लिए अपील दायर की। यह सब कुछ भगत सिंह की इच्छा के खिलाफ हो रहा था क्यों कि भगत सिंह नहीं चाहते थे कि उनकी सजा माफ की जाए।

23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और जब उनसे उनकी आखरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि वह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और उन्हें वह पूरी करने का समय दिया जाए। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था- "ठहरिए! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।" फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले - "ठीक है अब चलो।"

के अधजले टुकड़ों को सतलुज नदी में फेंका और भाग गए। जब गाँव वाले पास आए तब उन्होंने इनके मृत शरीर के टुकड़ो कों एकत्रित कर विधिवत दाह संस्कार किया। और भगत सिंह हमेशा के लिए अमर हो गये। इसके बाद लोग अंग्रेजों के साथ-साथ गाँधी जी को भी इनकी मौत का जिम्मेवार समझने लगे। इस कारण जब गाँधी जी काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में हिस्सा लेने जा रहे थे तो लोगों ने काले झण्डों के साथ गाँधी जी का स्वागत किया। एकाध जग़ह पर गाँधी जी पर हमला भी हुआ, किन्तु सादी वर्दी में उनके साथ चल रही पुलिस ने उन्हें बचा लिया।

फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे -

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे।
मेरा रँग दे बसन्ती चोला।
माय रँग दे बसन्ती चोला॥

फाँसी के बाद कहीं कोई आन्दोलन न भड़क जाये इसके डर से अंग्रेजों ने पहले इनके मृत शरीर के टुकड़े किये फिर इसे बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गये जहाँ घी के बदले मिट्टी का तेल डालकर ही इनको जलाया जाने लगा। गाँव के लोगों ने आग जलती देखी तो करीब आए। इससे डरकर अंग्रेजों ने इनकी लाश

अंत में हम कह सकते है कि भगत सिंह केवल स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि एक समाजवादी विचारक भी थे, जिन्होंने सामाजिक न्याय और श्रमिकों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। उनकी बहादुरी, बलिदान और क्रांतिकारी विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अमिट छाप छोड़ी और आज भी युवाओं को प्रेरित करती है। मात्र 23 वर्ष की आयु में हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमने वाले भगत सिंह आज भी करोडो युवाओं के प्रेरणास्रोत है। उनका जीवन हमें सिखाता है स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए किसी भी बलिदान से पीछे नहीं हटना चाहिए।

सीख: रामायण के कुछ प्रमुख पात्रों से

श्री श्रवण कुमार यादव

पुत्र- श्री संजीव कुमार यादव, वरिष्ठ अनुवादक

रामायण एक ऐसा पवित्र ग्रंथ है, जिसे न सिर्फ हिंदू समाज के लोग पढ़ते हैं बल्कि विश्व के अनेक धर्मों व सम्प्रदायों के लोग इसका पठन करके मानव धर्म की अग्रसर होने का प्रयास करते हैं। इस महान ग्रंथ का लेखन महर्षि बाल्मिकी ने किया था।

आधुनिक युग में भी रामायण की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि यह सत्य, धर्म, न्याय, कर्तव्य, प्रेम और समर्पण जैसे नैतिक मूल्यों का एक महान स्रोत है, जो जीवन जीने के तरीके सिखाता है। रामायण में आदर्श जीवन के लिए अनुशासन, मर्यादा, त्याग, क्षमा, और सभी के प्रति समान व्यवहार करने की सीख मिलती है, जिससे व्यक्ति को सुख-शांति मिलती है और बुराई पर अच्छाई की जीत होती है। यह न केवल एक पवित्र ग्रंथ है, बल्कि एक ऐसा सांस्कृतिक भंडार है जो युगों-युगों तक मानवीय जीवन के लिए मार्गदर्शन करता है।

रामायण हमें धर्म के रास्ते पर चलना सिखाती है और हर स्थिति में सही मार्ग पर चलने का ज्ञान देती है। यह सत्य, न्याय और कर्तव्य के पालन को महत्व देती है, जो एक आदर्श समाज के लिए आवश्यक हैं। राम नाम का जाप और रामायण का पाठ करने से प्रत्येक इंसान को आत्मिक शांति मिलने के साथ-साथ कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित करता है। देश के सभी नागरिकों से यह अपेक्षा होती है कि वे अपने देश की संविधान में उल्लिखित कर्तव्यों का ईमानदारी व निष्ठा से निर्वहन करे और इन कर्तव्यों का निर्वहन तभी किया जा सकता है जब व्यक्ति के अंदर नैतिक व आध्यात्मिक भावना हो क्योंकि नैतिक व अध्यात्मिक भावना से अभिप्रेरित होकर ही कोई व्यक्ति राष्ट्र प्रेम व मानव धर्म की ओर अग्रसर हो सकता है।

यह महाकाव्य पिता-पुत्र, माता-पुत्र/पुत्री, पति-पत्नी, भाई-भाई, गुरू-शिष्य, राजा-प्रजा और परिवार व समाज के अन्य सदस्यों के बीच के रिश्तों के आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है, जैसे राम और सीता के बीच का प्यार और समर्पण, राम और उनके सभी भाईयों के लिए प्रेम व त्याग की भावना, राम और उनके पिता राजा दशरथ और माताओं के साथ आज्ञाकारी व कर्तव्यपरायण की भावना, महर्षि विश्वामित्र एवं उनके शिष्यों को बीच गुरू-शिष्य की अटूट मिसाल एवं श्री राम और उनके प्रिय भक्त हनुमान जी के साथ प्रेम और सेवा का अद्भुत उदाहरण मिलता है। इसमें सिखाया गया है कि सभी के साथ समान और प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए, जैसा भगवान राम ने किया था। रामायण अच्छी संगति के महत्व को भी उजागर करती है, क्योंकि यह बताती है कि गलत संगति व्यक्ति को जीवन में प्रगति करने से रोकती है।

किसी भी धर्म का धर्मग्रंथ- बाइबिल, कुराण, गुरूग्रंथ या भागवद गीता ये सभी हमें जीवन का महत्व बताते हुए जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं।

आइए हम इस लेख के माध्यम से रामायण के कुछ पात्रों से मिलने वाली सीख का संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

श्री राम-

रामायण में भगवान राम ने अपने जीवन में अनुशासन और मर्यादा का पालन किया, जो सुखी और सफल जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी धैर्य और संयम बनाए रखने की सीख दी, जो विषम परिस्थितियों से लड़ने में मदद करती है। उनके चरित्र से यह सीख मिली कि इंसान को बदला लेने की बजाय माफ़ करना और दूसरों पर दया करना चाहिए, जो

मानवीय गुणों में प्रमुख हैं। उनसे हमें यह भी सीख मिलती है कि धर्म व राष्ट्र की रक्षा के लिए हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए एवं जनहित के लिए आवश्यकता पड़ने पर अपराधी को दंड भी दिया जाना चाहिए।

माता सीता-

माता सीता सनातन इतिहास में एक आदर्श महिला हुई हैं जिन्होंने मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम की जीवन संगिनी बनकर उनका हर कदम पर साथ दिया। माता सीता मिथिला देश की सबसे बड़ी व सबसे प्रिय राजकुमारी थी पर फिर भी उन्हें महंगे कपड़े, महंगे जेवर, महंगे साजो श्रृंगार में रुचि नहीं थी, उन्होंने हमेशा अपने ज्ञान, अपने विचारों से ही सबका दिल जीता था। श्री राम के साथ विवाह होने के पश्चात तुरन्त उन्हें वनवास जाना पड़ा, सीता जी चाहती तो अयोध्या के महल में आराम से रह सकती थी पर उन्होंने अपने पति राम के साथ जंगल जाना चुना। क्योंकि जीवनसाथी का मतलब सिर्फ सुखों में ही साथ रहना नहीं होता बल्कि दुखों में भी साथ निभाना होता है। यही नहीं जब रावण सीता जी का हरण कर उसे लंका ले गया और सीता जी को लंका की महारानी बनाने का प्रस्ताव दिया तब उन्होने उनका प्रस्ताव ठुकरा कर उनका घमंड चूर कर दिया। माता सीता हम सबकी आदर्श है, हम सब की प्रेरणास्त्रोत है। माता सीता जी का चरित्र शुद्ध सरल, सात्विक, सतीत्व, स्वावलंबी, संघर्ष, शालीनता, सुदृढता, सुंदरता ,सहृदयता का परिचायक है।

लक्ष्मण-

माता सुमित्रा का पुत्र, भगवान राम के भाई एवं उर्मिला के पति लक्ष्मण का किरदार रामायण के प्रमुख पात्रों में से एक है। उन्होंने भ्रातृ-प्रेम एवं राजा की सेवा के लिए अपनी सारी सुख-सुविधाओं का त्याग किया। इतना ही नहीं वे इस पुण्य कार्य के लिए अपनी पत्नी के विरह का भी सहन किया। लक्ष्मणजी का भगवान श्री राम और माता सीता के प्रति सेवा भाव युगों-युगों तक युवाओं को प्रभावित करता रहेगा। श्यामाकांत कुलकर्णी ने लक्ष्मण जी के विषय में अपनी पुस्तक सौमित्र में विस्तृत और विश्लेषणात्मक वर्णन किया है।

भरत-

माता कैकेयी का पुत्र, राम के प्रिय भाई एवं मांडवी का पति भरत जी ने पूरे मानव जाति को यह संदेश दिया कि वे धर्म के लिए राजा का पद मिलने के बावजूद अपना सर्वस्व त्याग सकते हैं और राज्य की सेवा के लिए वल्कल वस्त्र पहनकर भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया कि इंसान को मौकापरस्त न होकर धर्म की राह पर चलना ही श्रेयस्कर है। रामदेव प्रसाद द्वारा रचित श्री भरत-कथामृत पुस्तक भरत के चरित्र, उनके प्रेम और त्याग पर आधारित है। इसके अतिरिक्त अनंतनंद रामबचन द्वारा लिखित भरत: रामायण में प्रेम और न्याय भरत जी के चारीत्रिक गुणों को दर्शाता है।

शत्रुध्न-

माता सुमित्रा का पुत्र, लक्ष्मण का सगा भाई शत्रुघ्न ने न केवल लवणासुर जैसे दुष्ट राक्षस का वध किया था, बल्कि भगवान राम की 14 वर्षों के वनवास में अयोध्या की रक्षा की और भरत की सेवा में समर्पित जीवन जिया। वे भरत के प्रति अपनी निष्ठा और सेवा के लिए प्रसिद्ध थे, उन्होंने हमेशा भरत का साथ दिया। शत्रुघ्न की वीरता और संयमित जीवन उनके अन्य भाइयों से उन्हें अलग और विशेष बनाता है।

हनुमान-

श्री राम भगवान के अनन्य भक्त हनुमानजी का व्यक्तित्व आम लोगों और युवाओं को निष्ठा, मेहनत, विनम्रता सिखाता है। हनुमानजी का चरित्र अतुलित पराक्रम, ज्ञान और शक्ति के बाद भी अहंकारविहीन है। हनुमानजी के सिद्धांतों, नियमों और आदर्शों पर चलकर आसानी से सफलता का आसमान छुआ जा सकता है। बाधाओं को पारकर लंका में माता सीता का पता लगाना, अपने रामदूत होने का उन्हें विश्वास दिलाना और राक्षसों का वध कर लंका को जलाकर लौटना जैसे वीरतापूर्ण कार्य के बाद भी अभिमान नहीं होना हनुमानजी का विशेष गुण है। हनुमानजी का पात्र हमें अपने विवेक का सही उपयोग करना सिखाता है।

सूक्ष्म रूप धरि सिंयहि दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा..

हनुमान चालीसा में यह बताया गया है कि हमारे पास इतना विवेक होना चाहिए कि कब छोटा बनना है और कब बड़ा बनना है। हनुमानजी से शिक्षा मिलती है कि हमें अपने विवेक का इस्तेमाल कर जीवन जीना चाहिए।

हनुमानजी से युवा पीढ़ी को मानसिक के साथ शारीरिक बल की प्रेरणा लेनी चाहिए। वर्तमान पीढ़ी पढ़-लिखकर जीवन में सफल बनना चाहती है किंतु शारीरिक बल की उपेक्षा करती है। हनुमानजी का जीवन सिखाता है कि संकट में मनोबल और मानसिक एकाग्रता बनाए रखना है। लक्ष्मण को बचाने के लिए किस तरह संजीवनी पहाड़ उठा लाते हैं। इस तरह वो संकट में धैर्य, मानसिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं। हनुमानजी से कार्य या लक्ष्य के प्रति समर्पण की सीख मिलती है। हनुमानजी श्रीराम के हर आदेश का पालन कर सिद्ध करते हैं। इसके बाद भी इसका श्रेय नहीं लेते, बल्कि इसका श्रेय भी भगवान राम को ही देते हैं।

रावण-

यद्यपि रावण राक्षस कुल का था तथापि उसमें भी कई अच्छे गुण थे। हालांकि उसके ज्ञान का अहंकार एवं अधर्म के राह पर चलने के कारण उसका सर्वनाश हुआ फिर भी वह कई गुणों से परिपूर्ण था। रामायण में रावण का पात्र बुद्धिजीवीता, लक्ष्य, प्रतिभा का सम्मान, आध्यात्मिक गहराई, चरित्र की विविधता, अहंकार और गर्व के खतरे, लालच और इच्छाओं के परिणाम और नैतिक शिक्षाओं के बारे में कई महत्वपूर्ण सीखें प्रदान करता है। रावण का वध करने के पश्चात भगवान राम ने भी उसके ज्ञान से अभिभूत होकर अपने अनुज भाई लक्ष्मणजी को रावण से ज्ञान प्राप्त करने का सुझाव दिया।

विभीषण-

रावण का छोटा भाई विभीषण यद्यपि राक्षस कुल का था। फिर भी उन्होंने धर्म का अनुकरण किया और अपने बड़े भाई रावण को समय-समय पर चेताते रहे कि अधर्म का साथ छोड़कर माता सीता को श्री राम को सौंप दें। विभीषण ने रावण वध की गुप्त बातें बताकर भगवान राम की सहायता की। उन्होंने जनमानस को साफ संदेश दिया कि धर्म के रास्ते पर जो भी अधर्मी आए, उसका साथ छोड़ देना चाहिए।

जामवंत-

इन्हें ब्रह्मा का अंशावतार और ऋक्षराज (भालुओं का राजा) माना जाता है। उन्होंने भगवान राम की सेना में प्रमुख सेना निभाई और जब सागर तट पर पहुंच कर सभी उस विशाल समुद्र को देख कर हताश हो जाते हैं तो जामवंत ही हुनमानजी को उनकी शक्तियों का भान करवाते हैं जिसके बाद हनुमानजी समुद्र को लांघते हैं। उन्हें अत्यंत विद्वान, बुद्धिमान, वेदपाठी और सदा अध्ययन करने वाला बताया गया है। उन्हें सभी वेद, पुराण, शास्त्र कंठस्थ थे। श्रीरामजी की सेना में वे सबसे वयोवृद्ध और बुद्धिमान थे और इसी कारण श्रीराम जी उनका बड़ा सम्मान करते थे और उनसे सलाह लिया करते थे।

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि भले ही रामायण की गाथा त्रेतायुग से संबंध रखता हो, तथापि आज के दौर में इस महाकाव्य की प्रासंगिकता बनी हुई है। आज भी विश्व के कई घरों में रामायण व रामचरितमानस का पाठ किया जाता है। रामायण के पात्रों से मिलने वाली सीख को हम अपने जीवन में उताकर धन्य हो सकते हैं। साथ ही हमें समाज व राष्ट्र प्रेम की भावना को बनाए रखने के लिए इस पवित्र ग्रंथ में निहित आदर्शों का अनुकरण करना चाहिए।

भारतीय महिला क्रिकेट: नई उड़ान, नई संभावना को सलाम

श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्रा

पत्नी- श्री अमित कुमार प्रधान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

महिला विश्व कप 2025 ने यह सिद्ध कर दिया कि अब भारत में खेल सिर्फ "मैदान" तक सीमित नहीं, यह राष्ट्रीय चेतना और गौरव का हिस्सा बन चुका है। यह नारी स्वाभिमान, श्रम और संघर्ष की कहानी है। क्रिकेट अब केवल पुरुषों की लोकप्रियता का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि महिलाओं की असाधारण योग्यता का उत्सव बन गया है।

2 नवंबर 2025 का रविवार भारतीय खेल जगत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया। यह वह दिन था जब नवी मुंबई का डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकेडमी मैदान न केवल एक विश्व कप का साक्षी बना, बल्कि भारतीय महिला शक्ति की अजेय प्रतिभा और जज्बे का भी प्रमाण देखा। शेफाली वर्मा ने 87 रन की पारी खेल कर विश्वकप को भारत के नाम कराने में अमूल्य योगदान दिया। शेफाली की यह पारी आत्मविश्वास से भरी होने के साथ-साथ सनसनीखेज पारी रही। इसी के साथ स्मृति मंधाना ने अपना सर्वश्रेष्ठ देते हुए भारत के लिये सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी बनी। उनकी टाइमिंग एवं कंवर ड्राइव ने सबका दिल जीत लिया। वैसे टीम का हर खिलाड़ी इस आश्चर्यकारी जीत के लिये बधाई का पात्र है। निश्चित ही भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने आईसीसी महिला विश्व कप 2025 अपने नाम कर ऐसा इतिहास रचा, जो न केवल खेल का अध्याय है बल्कि सामाजिक परिवर्तन और नारी सशक्तिकरण की प्रेरक गाथा भी है। विश्व विजेता बनने के बाद भारतीय महिला क्रिकेट की टीम की चर्चा दुनिया के हर कोने में हो रही है।

यह जीत केवल एक ट्रॉफी भर नहीं, बल्कि उस नारी शक्ति का उद्घोष है जो वर्षों से अपने अस्तित्व को साबित करने में लगी थी। भारतीय बेटियों ने मैदान में यह दिखा दिया कि अब "खेल" सिर्फ पुरुषों का क्षेत्र नहीं रहा, यह वह मंच है जहां नारी की प्रतिभा, रणनीति, धैर्य और आत्मविश्वास अपनी सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति पा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर टीम को बधाई देते हुए कहा कि "यह केवल क्रिकेट की जीत नहीं, बल्कि भारत की नारी शक्ति, परिश्रम और आत्मविश्वास की जीत है।" सच भी यही है कि यह विजय भारत की नई महिला चेतना का प्रतीक है, वह चेतना जो अब हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही है। अब भारतीय महिलाओं को हाशिया नहीं, पूरा पृष्ठ चाहिए और यह बात उन्होंने इस ऐतिहासिक जीत को हासिल करके साबित किया है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार महिला वनडे विश्व कप अपने नाम कर ऐतिहासिक जीत हासिल की है। भारत और दक्षिण-अफ्रीका का फाइनल विश्व कप मैच सदा के लिए इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों के साथ अतीत के पन्नों में दर्ज हो गई है। हरमनप्रीत की कप्तानी में महिला क्रिकेट टीम ने यह यादगार जीत हासिल की है। इससे पहले मिताली राज की कप्तानी में महिला क्रिकेट टीम 2005 और 2017 में फाइनल तक पहुंची थी, लेकिन यहां आकर ट्रॉफी हाथ से फिसल गई थी। भारतीय महिला टीम ने टॉस हारने के बाद भी बल्लेबाजी के लिए उतरी और 298 रन बनाए। साउथ अफ्रीक की टीम इस आंकड़े को छू नहीं पाई, भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर 47 साल के इंतजार को खत्म किया।

इस महान सफलता के पीछे आईसीसी अध्यक्ष जय शाह की दूरदर्शी नीतियों और नेतृत्व का भी बड़ा योगदान है। उनके कार्यकाल में महिला क्रिकेट को वह सम्मान और अवसर मिले जिसकी वह वर्षों से हकदार थी। जय शाह ने न केवल संरचनात्मक सुधार किए बल्कि महिला क्रिकेट के लिए आधारभूत ढांचे,

सुविधाओं और प्रोत्साहन योजनाओं को नई दिशा दी। उन्होंने यह साबित कर दिया कि जब नेतृत्व में दृष्टि होती है, तो इतिहास बदलता है। इस विश्व कप में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने खेल से दुनिया को चकित किया। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने जिस साहस और सूझबूझ से टीम का नेतृत्व किया, वह प्रेरणा का विषय है। उनके बल्ले से निकले हर रन ने नारी शक्ति की धुन गाई। स्मृति मंधाना की क्लासिकल बल्लेबाजी ने विपक्षी गेंदबाजों को बेहाल कर दिया, जबकि युवा खिलाड़ी शैफाली वर्मा की आक्रामकता ने नई पीढ़ी की ऊर्जा को स्वर दिया। गेंदबाजी में रेणुका ठाकुर और पूजा वस्त्राकर की सटीक लाइन-लेंथ ने टीम को हर मुश्किल समय में संभाला, वहीं स्पिनर दीप्ति शर्मा ने अपनी जादुई गेंदों से विरोधियों के हौसले पस्त किए। इस टूर्नामेंट में भारत की फील्डिंग और फिटनेस भी अप्रतिम रही, जो यह दर्शाती है कि अब भारतीय महिला क्रिकेट केवल तकनीक नहीं, बल्कि रणनीति और समर्पण के सर्वोच्च मानकों पर खड़ी है। महिला क्रिकेट खिलाड़ी नवीन क्षमताओं की नई उड़ान भरते हुए हर मन की मुराद पूरी कर रही है। यह जीत केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय खेल संस्कृति में परिवर्तन की दिशा का प्रतीक है। आज भारत की बेटियां छोटे कस्बों और गाँवों से निकलकर विश्व मंच पर चमक रही हैं। यह उस सामाजिक परिवर्तन का परिणाम है जिसमें परिवार, समाज और सरकार ने नारी खेल प्रतिभा को अवसर देना शुरू किया है।

महिला विश्व कप 2025 ने यह सिद्ध कर दिया कि अब भारत में खेल सिर्फ "मैदान" तक सीमित नहीं, यह राष्ट्रीय चेतना और गौरव का हिस्सा बन चुका है। यह नारी स्वाभिमान, श्रम और संघर्ष की कहानी है। क्रिकेट अब केवल पुरुषों की लोकप्रियता का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि महिलाओं की असाधारण योग्यता का उत्सव बन गया है। भारत की यह जीत उस भविष्य की ओर इशारा करती है जहाँ खेल, लिंग भेद से परे, केवल प्रतिभा और परिश्रम के आधार पर सम्मान पाएगा। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की यह ऐतिहासिक विजय केवल कप जीतने की कहानी नहीं है, यह उस भारत की घोषणा है जो अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने का साहस रखता है। यह जीत हर उस लड़की की प्रेरणा है जो गली के मैदान में क्रिकेट बैट थामे सपना देखती है कि एक दिन वह भी भारत के लिए खेलेगी। यह स्वर्णिम विजय हमें यह संदेश देती है कि भारत की नारी अब हर क्षेत्र में "खेल बदलने" के लिए तैयार है। जय शाह जैसे सक्षम नेतृत्व और खिलाड़ियों की प्रतिभा से सुसज्जित यह टीम आने वाले समय में विश्व क्रिकेट का नया अध्याय लिखेगी, जहाँ हर शॉट में आत्मविश्वास होगा, हर गेंद में संकल्प, और हर जीत में भारत की बेटियों की दमकती मुस्कान। भारत की बेटियाँ अब सिर्फ खेल नहीं रही हैं बल्कि वे इतिहास रच रही हैं।

देश पर छा रहे अनेकानेक उजालों के बीच महिला विश्व कप 2025 रूपी उजाला देशवासियों को प्रसन्नता का प्रकाश दे गया। संदेश दे गया कि देश का एक भी व्यक्ति अगर दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की ठान ले तो वह शिखर पर पहुंच सकता है। विश्व को बौना बना सकता है। पूरे देश के निवासियों का सिर ऊंचा कर सकता है। महिलाओं की इस करिश्माई उपलब्धि के बाद अखबारों के शीर्ष में यह समाचार छपा और सबको लगा कि शब्द उन पृष्ठों से बाहर निकलकर नाच रहे हैं। भारतीय महिला खिलाड़ियों ने खिलाड़ीपन के लम्बे रन-अप को पल-पल जीया है। इस दौरान बहुत कुछ पीया है तभी वे विश्व विजेता बनी। वरना यहां तक पहुंचते-पहुंचते कईयों के घुटने घिस जाते हैं। एक बूंद अमृत पीने के लिए समुद्र पीना पड़ता है।

सम्मान, पदवी, उपाधियां, अलंकरण बहुतों को मिलते हैं पर सही सीने पर सही तमगा और सही नाम के आगे सही सम्बोधन कभी-कभी लगता है। जैसा महिला विश्व कप 2025 की भारतीय महिला खिलाड़ियों के सीनों पर लगा है। जब भी कोई अर्जुन धनुष उठाता है, निशाना बांधता है तो करोड़ों के मन में एक संकल्प, एक एकाग्रता का भाव जाग उठता है और कई अर्जुन पैदा होते हैं। अपने देश में हर बल्ला उठाने वाला अपने को गावस्कर, तेंदुलकर विराट कोहली, रोहित समझता है, हर बॉल पकड़ने वाला अपने को कपिल-अर्शदीप, बुमराह समझता है। हॉकी की स्टिक पकड़ने वाला हर खिलाड़ी अपने को ध्यानचंद, हर टेनिस का रैकेट पकड़ने वाला अपने को रामानाथन कृष्णन समझता है। और भी कई नाम हैं, मिल्खा सिंह, पी.टी. उषा, प्रकाश पादुकोण, गीत सेठी, जो माप बन गये हैं खेलों की ऊंचाई के। आज शेफाली हो स्मृति या फिर जेमिमा हो या दीप्ति आज माप बन गयी है और जो माप बन जाता है वह मनुष्य के उत्थान और प्रगति की श्रेष्ठ स्थिति है। यह अनुकरणीय है। जो भी कोई मूल्य स्थापित करता है, जो भी कोई पात्रता पैदा करता है, जो भी कोई सृजन करता है, जो देश का गौरव बढ़ाता है, जो गीतों में गाया जाता है, उसे सलाम। भारतीय महिला क्रिकेट टीम को सलाम।

दलखाई: पश्चिमी ओडिशा की एक अनूठी लोक परंपरा

श्री अमित कुमार प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पश्चिमी ओडिशा, ओडिशा राज्य का एक हरा-भरा क्षेत्र है, जिसमें ओडिशा के ग्यारह जिले शामिल हैं। इस क्षेत्र में समृद्ध लोक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत है। यह स्थान अद्वितीय है और ओडिशा के अन्य भागों से कुछ अलग और खास है। इसकी आदिवासी संस्कृति इस क्षेत्र को एक नई पहचान देती है। यह क्षेत्र अपने लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है। लोकगीतों में लोककथाएं, लोक संगीत, लोक कला और शिल्प, मिथक, पहेलियां, कहावतें, लोक नृत्य, लोक उत्सव आदि शामिल हैं। लोक संस्कृति पारंपरिक ज्ञान का भंडार है, इसलिए इसे पश्चिमी ओडिशा के ग्रामीण जीवन में आज भी संरक्षित रखा गया है। दलखाई इस क्षेत्र का एक लोकप्रिय लोकगीत, नृत्य और उत्सव है। कुछ लोककथाकारों का कहना है कि पश्चिमी ओडिशा में दलखाई उत्सव अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। दलखाई गीत और नृत्य इतने सरल और सहज हैं कि कोई भी गा और नाच सकता है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित होता है। यह नृत्य एकल और समूह दोनों में किया जाता है, पुरुष और महिला दोनों इसमें भाग ले सकते हैं, लेकिन अधिकतर मामलों में महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक शामिल होती हैं। समूह नृत्य, विशेषकर महिला समूह (जिसमें पुरुष भी शामिल हो सकते हैं), अधिक प्रचलित हैं। पुरुष इस प्रदर्शन में संगीतकार के रूप में भाग लेते हैं। दलखाई गीत कई सामाजिक समस्याओं, रीति-रिवाजों, जीवन शैली, लैंगिक मुद्दों, नैतिक शिक्षा, प्रकृति के वर्णन, देवी-देवताओं की प्रार्थना आदि को प्रतिबिंबित करता है। हम पश्चिमी ओडिशा के लोकगीतों और नृत्यों से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। दलखाई गीत से हम जीवन कौशल सीख सकते हैं। इस शोधपत्र में मैं दलखाई गीत और नृत्य का विश्लेषण करना चाहता हूं और यह देखना चाहता हूं कि यह पश्चिमी ओडिशा के जीवन और रहन-सहन पर किस प्रकार प्रभाव डालता है, साथ ही दलखाई पर आधुनिकता का क्या प्रभाव है।

दलखाई पश्चिमी ओडिशा को एक विशेष पहचान प्रदान करता है। दलखाई एक मनमोहक लोकगीत और नृत्य है, जिसे पश्चिमी ओडिशा की महिला नर्तकियाँ प्रस्तुत करती हैं। यह नृत्य धार्मिक जुलूसों और सामाजिक समारोहों के दौरान सबसे अधिक प्रचलित है। पश्चिमी ओडिशा का समाज सांस्कृतिक संकट से जूझ रहा है; यह इस बात से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक सामुदायिक संगठन गंभीर नैतिक, सामाजिक और आर्थिक दबाव के कारण दमित हो रहे हैं। पश्चिमी ओडिशा के लोकनृत्यों ने राष्ट्रीय अखंडता को पुनर्स्थापित करने, सामाजिक एकजुटता को मजबूत करने, सांप्रदायिक सद्भाव को सुदृढ़ करने, मूल्य प्रणाली को तीव्र करने और क्षेत्र के लोगों में मानवतावाद के तत्वों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह स्वदेशी ज्ञान प्राप्त करने का एक वास्तविक मंच है। पश्चिमी ओडिशा के लोकगीत और नृत्य जीवन को उसके विभिन्न रंगों में, सुख-दुख, उतार-चढ़ाव को मधुर धुनों और आकर्षक तरीकों से चित्रित करते हैं। पश्चिमी ओडिशा की विविध संस्कृति में विभिन्न प्रकार के लोकगीतों और नृत्यों का खजाना है। ये पश्चिमी ओडिशा के लोकगीत और नृत्य ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित हैं और धार्मिक, मौसमी त्योहारों या सामाजिक समारोहों के दौरान प्रस्तुत किए जाते हैं। पश्चिमी ओडिशा के लोक नृत्य हमेशा लोकगीतों और लोक संगीत वाद्ययंत्रों जैसे ढोल, मुहुरी, तासा, निसान आदि के साथ किए जाते हैं। पश्चिमी ओडिशा के लोक नृत्य ग्रामीण लोगों द्वारा अपने जीवन का आनंद लेने के लिए किए जाते हैं। पश्चिमी ओडिशा का लोक नृत्य यहाँ के लोगों

के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। पश्चिमी ओडिशा में अनेक लोक नृत्य पाए जाते हैं, जैसे दलखाई, रसारकेली, मैलाजाड़ा, चुटकुकुटा, नाचनिया बजनिया आदि। हमें नहीं पता कि इन नृत्यों का आविष्कार किसने और कब किया। जब ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के कोई अन्य साधन नहीं थे, तब ये नृत्य वहाँ के लोकप्रिय मनोरंजन के प्राचीन स्रोत थे। इस क्षेत्र के लोग मेलों, त्योहारों, धार्मिक और सामाजिक समारोहों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। दलखाई नृत्य इस क्षेत्र के लोगों को एक नई पहचान देता है। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सभी दलखाई नृत्य गा और नाच सकते हैं। इस क्षेत्र में सभी दलखाई कलाकार हैं। संगीत और नृत्य इस क्षेत्र के लोगों के जीवन का अभिन्न अंग हैं। लोक नृत्य और गीत, विशेष रूप से दलखाई गीत और नृत्य, समुदाय से गहराई से जुड़े हुए हैं। इस क्षेत्र के लोग अक्सर कहते हैं कि, "दलखाई तो दलखाई है", यानी यह एक स्वतंत्र, अनूठा और विशेष रूप से दिल को छू लेने वाला नृत्य है। यह एक धार्मिक पारंपरिक लोक नृत्य भी है जो कृषि और उर्वरता से जुड़ा हुआ है। दलखाई को "उर्वरता की देवी" और "आयुदात्री (दीर्घायु देने वाली देवी)" माना जाता है। यह नृत्य मिर्धा, कोंध, गोंड, खड़िया, बिंझाल आदि जनजातियों के साथ-साथ कुल्ता, माली, गौड़ा, तेलसी, दुंबल आदि जातियों द्वारा भी किया जाता है। यह एक आम मान्यता है कि यदि दलखाई देवी प्रसन्न हों, तो दुनिया में हरियाली छा जाएगी, साथ ही अच्छी फसल होगी और लोग सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

लोककथाओं का प्रवाह सभ्यता के उदय से ही फलता-फूलता रहा है। इसे एक विशेष विधा के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए लोककथाविदों के आगमन तक सदियों का इंतजार करना पड़ा। भारत में लोककथाओं की समृद्ध विरासत है और यह भारत का सांस्कृतिक दर्पण है। अंग्रेजों के आगमन और लोककथा सामग्री के संग्रह में उनके प्रभाव से,स्थानीय विद्वानों को इस विषय पर काम करने की प्रेरणा मिली। भारत के प्रत्येक राज्य में लोककथाएं हैं। ओडिशा एक रंगीन राज्य है जो अपनी लोक संस्कृति और परंपरा के लिए प्रसिद्ध है और ओडिशा के पश्चिमी भाग को पश्चिमी ओडिशा कहा जाता है। हालांकि यह क्षेत्र लोककथाओं से भरा हुआ है, लेकिन इस विषय पर संतोषजनक कार्य नहीं हुआ है।

दलखाई गीत और नृत्य

दलखाई पश्चिमी ओडिशा के लोकगीतों और नृत्यों का सबसे लोकप्रिय रूप है। यह मुख्य रूप से "दलखाई ओशा" (वैजुतीया) (महाष्टमी/दुर्गाष्टमी) नामक धार्मिक अवसर पर मनाया जाता है, जो युवतियों और विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाता है। इस पर्व में तलाकशुदा महिलाएं और अजुरी (वे महिलाएं जो पारिवारिक कलह के कारण अपने पति से अलग हो गई हैं लेकिन तलाक नहीं लेती हैं, उन्हें अपने पति के पास वापस लौटने का मौका मिलता है) शामिल हैं। यह पर्व अश्विन (अक्टूबर) माह की शुक्ल पक्ष की अष्टम तिथि को मनाया जाता है। दलखाई देवी इस अवसर की अधिष्ठाता देवी हैं। यह गीत उन्हीं को समर्पित है। इस गीत के बाद लोक संगीत पर सामूहिक नृत्य किया जाता है, जिसमें केवल गैर-आर्य वंश की युवतियाँ (विवाहित और अविवाहित दोनों) भाग लेती हैं। यह नृत्य मुख्यतः बिंझल, कुड़ा, सौरा, गोंड खाड़िया, सतनामी, साबर, मिर्धा और कुछ अन्य गैर-आदिवासी जातियों जैसे दुमल, कुल्ता, माली, तेली, गौड़ा आदि की युवतियों द्वारा किया जाता है। देवी दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पूरे दिन और रात उपवास रखा जाता है, कुछ स्थानों पर युवतियाँ देवी माहेश्वरी का भी आशीर्वाद लेती हैं। विवाहित महिलाएँ इस त्योहार को मनाने के लिए अपनी माँ के घर आती हैं। इसे नारी सशक्तिकरण का त्योहार कहा जा सकता है। वे अपने भाईयों के कल्याण और दीर्घायु के लिए देवी से प्रार्थना करती हैं। दलखाई एक लोक देवी हैं। देवी दलखाई ग्राम प्रधान के घर की दीवार पर बने 'सुल्हा कुठी' (सोलह वर्ग मीटर) में निवास करती हैं। इन नृत्यों के दौरान पुरुष ढोल और संगीत वादक के रूप में शामिल होते हैं। नृत्य के साथ ढोल, निसान, तमकी, तासा और मुहुरी जैसे वाद्ययंत्रों द्वारा वादित लोक संगीत का एक ऑर्केस्ट्रा होता है। ढोल वादक ताल को नियंत्रित करता है। दलखाई एक अनुष्ठानिक लोक नृत्य होने के साथ-साथ एक लोकगीत भी है। दलखाई की मुख्य रुचि नृत्य और गीत में है। गायक गीत की शुरुआत 'दलखाई-रे, दलखाई-रे' बोलकर करते हैं और फिर 'दलखाई-रे' कहकर पंक्तियों का समापन करते हैं। गीतों में प्रकृति, सत्य, ऋतुओं, देवी-देवताओं, व्यंग्य, लैंगिक मुद्दों, जीवनशैली, विवाह, यौन संबंध और कामुकता के साथ-साथ रोजमर्रा की जिंदगी का वर्णन मिलता है। गायक अपनी स्मृति पर निर्भर रहते हैं और जब उन्हें कुछ अटपटा लगता है तो वे गीत गाते समय अपनी सूझबूझ का प्रयोग करते हैं। गीतों की कोई लिखित पटकथा नहीं होती, इसलिए सहजता को अद्भुत रूप से बनाए रखा जाता है। महिलाएं अपने गीतों के माध्यम से पुरुष दर्शकों को प्रभावित करने के लिए स्थानीय भाषा में टिप्पणी करती हैं, जिसे 'पड्जुर्बा' कहा जाता है। यह पड्जुर्बा नृत्य दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करता है, और जिस पुरुष को नर्तकी गीत के माध्यम से प्रभावित करती है, वह इनाम के तौर पर पैसे देता है, जिसे 'बंदेन पैसे' कहा जाता है।

इस नृत्य और गीत के लिए किसी कुशल या पेशेवर गायक या नर्तकी की आवश्यकता नहीं होती है। वे ढोल की थाप पर नाचते हैं। ढोल बजाने वाले (ढोलिया) की इस नृत्य में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह ढोल की ताल पर नृत्य करता है।

दलखाई उत्सव की पूजा शैली

दलखाई गीत धरती माता, माँ दुर्गा और माँ माहेश्वरी का स्पष्ट वर्णन प्रस्तुत करते हैं। प्रथम दलखाई गायक दलखाई देवी से आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं। ढोलिया सबसे पहले वर्णीपार बजाता है। ढोल, निशान, ताशा, माहुरी और तिमकिड़ी पाँच वाद्ययंत्र हैं,जिन्हें 'पंच बद्य' कहा जाता है, जिनका उपयोग इस लोक नृत्य को प्रस्तुत करने में किया जाता है। यह एक समूह नृत्य है। देवी की पूजा के बाद, दलखाई देवी एक पुरुष (मझीहारदोम या बेजी) के शरीर में प्रकट होती हैं और वह पुरुष नृत्य करता है और लोगों को आशीर्वाद देता है। लोग देवी को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि देते हैं। जिस स्थान पर वे पूजा, गायन और नृत्य करते हैं, उसे 'दलखाई गुड़ी' या "दलटोल" कहा जाता है। यह पूजा दशहरा के महीने (सितंबर-अक्टूबर के बीच) में सोलह दिनों तक चलती है। हर दिन पूजा के बाद, महिलाएं दोपहर में गीत और नृत्य प्रस्तुत करती हैं। दलखाई नृत्य और गीत "नुआखाई" उत्सव की दोपहर में प्रस्तुत किए जाते हैं, जो इस क्षेत्र का प्रसिद्ध उत्सव है। और "नुआखाई" के अगले दिन भी। पश्चिमी ओडिशा के कुछ क्षेत्रों में यह "चैत्र पूर्णिमा" (मार्च की पूर्णिमा) को भी प्रस्तुत किया जाता है।

दलखाई में आधुनिकता

दलखाई केवल एक धार्मिक नृत्य नहीं है; इस नृत्य और गीत में कलाकारों का प्रेम और भावना झलकती है। गीत के माध्यम से उनके छिपे हुए दर्द और संवेदनाएं प्रकट होती हैं। राधा कृष्ण की प्रेम कथाएं और मनुष्य और ईश्वर के बीच का बंधन इस नृत्य में प्रस्तुत किया जाता है। लोक नृत्य दलखाई दिन-प्रतिदिन आधुनिक होता जा रहा है। इसकी लोकप्रियता भी लगातार बढ़ रही है। साथ ही साथ कई सांस्कृतिक दल देश भर में इस नृत्य का प्रदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दलखाई नृत्य की विशेष मांग है। शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रसार के कारण आधुनिक वाद्य यंत्र नृत्य में शामिल हो गए हैं। कलाकार आधुनिक रंगीन वेशभूषा का उपयोग करते हैं जो आधुनिक दर्शकों को आकर्षित करती है। आजकल दल्खाई के हर रूप में आधुनिकता समाहित हो गई है। यह जाति, वर्ग, क्षेत्र और धर्म की सीमाओं को पार कर चुकी है। कई कुशल और पेशेवर कलाकार इसके लिए पहल कर रहे हैं। इस नृत्य और गीत की मांग बढ़ रही है। अब यह पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं है। यह विषय की सीमाओं को भी पार कर चुकी है। पेशेवर कलाकार इसे हर अवसर पर प्रस्तुत करते हैं। अकुशल गायकों और नर्तकियों के लिए कोई जगह नहीं बची है, वे बाथरूम में गाने तक ही सीमित रह जाते हैं।आजकल दलखाई उत्सव में केवल पूजा-अर्चना ही की जाती है, महिलाएं नृत्य नहीं करतीं। नर्तक और गायक नृत्य की मौलिकता की बजाय दर्शकों की पसंद को अधिक महत्व दे रहे हैं। दलखाई का स्वरूप बदल गया है। अब इसमें सादगी और खुलापन नहीं रहा; यह आधुनिक दर्शकों की मांग के अनुसार बदलता रहता है। 'कुठी' दलखाई, 'दही' दलखाई, 'बट' दलखाई अब नहीं रहे, लेकिन 'मुडो' दलखाई नए रूप में आज भी जीवित है।

पोशाक

इस गीत और नृत्य में महिलाएं ताड़, बहासुता, जैसे पारंपरिक आभूषण पहनती हैं। कटरिया, बंदरिया, खाड़ू, पेरी, पायल, खगला, पेट्रीमाली, गंथिया, फासिया, पारकठी, सूना, गुना, पानपात्री, दुर्भावनापूर्ण। पुरुष झालका, खगला, पेसमाली आदि पहनते हैं और चप, चिड़िया का पंख, सुना आदि धारण करते हैं। महिलाएं दुइमुही कापता (दोनों तरफ आँचल वाली साड़ी को कापता कहते हैं) पहनती हैं और गले में लाल गमछा रखती हैं। पैरों में पैनरी, हाथों में कटारिया और बंदरिया, हाथों में चौनरिमुदी, पानपत्री, मलीफुल और परकथी, हाथों में ढलियाखुसा, गले में पनला, मली, पेसमाली और खगला, कमर में गुंची, दाहिनी भुजा पर बहासुता और ताड़ धारण करती हैं। महिलाएं ब्लाउज नहीं पहनतीं, उनके लिए तौलिया ही सब कुछ है। ढोलिया और पुरुष नर्तक अपनी धोती के रूप में संबलपुरी कापता, सिर पर तौलिया, पग और चिड़िया का पंख धारण करते हैं, और पैरों में चप पहनते हैं।

वर्गीकरण

दलखाई चार प्रकार की होती हैं:

1- मुदो दलखाई - जो मंडप के नीचे गाई और नाची जाती है।

2- कुठी दलखाई - यह कुठीशाला में, मुख्य देवी के पास गाई और नाची जाती है।

3- दही दलखाई - यह किसी एकांत स्थान पर पेड़ के नीचे गाई और नाची जाती है।

4- बात दलखाई - यह राहगीरों से पैसे इकट्ठा करने के लिए सड़क पर गाई और नाची जाती है।

वाद्य यंत्र

दलखाई नृत्य में पांच वाद्य यंत्रों (ढोल, निसान, तासा, मुहुरी और तिमिकिडी) की आवश्यकता होती है। आजकल

दर्शकों को आकर्षित करने के लिए कुछ आधुनिक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

दलखाई पश्चिमी ओडिशा की संस्कृति और समाज का चित्र प्रस्तुत करता है। यह आम लोगों के जीवन और जीवनशैली को दर्शाता है। प्राचीन काल में, पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के लिए अपनी भावनाओं, पीड़ाओं, समस्याओं, संवेदनाओं आदि को व्यक्त करने का यह एकमात्र माध्यम था। दलखाई मंडप गांवों का पारंपरिक शिक्षा केंद्र था। लोग यहां से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करते थे। दलखाई की मौलिकता को संरक्षित और बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यदि सरकार दलखाई गीतों और नृत्यों के वास्तविक सुधार के लिए कोई कदम उठाएगी, तो यह भावी पीढ़ी के लिए बेहतर होगा।

झारखंड – मेरी मिट्टी, मेरी पहचान

श्री राजा केशरी
आशुलिपिक

झारखंड शब्द अपने आप में ही एक गहरी अनुभूति समेटे हुए है। 'झार' यानी जंगल और 'खंड' यानी भूमि—अर्थात जंगलों की वह धरती जहाँ प्रकृति आज भी खुलकर साँस लेती है। यह केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि हरियाली, पहाड़ों, नदियों और संघर्षों से बनी एक जीवंत पहचान है।

झारखंड की धरती ने इतिहास के हर दौर में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है। यहाँ के आदिवासी समाज ने जल, जंगल और ज़मीन को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार माना। बिरसा मुंडा जैसे महान नायक ने इसी मिट्टी से उठकर अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। वर्ष 2000 में झारखंड का अलग राज्य बनना केवल एक प्रशासनिक निर्णय नहीं था, बल्कि वर्षों की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान की स्वीकृति थी।

यहाँ बहने वाली नदियाँ—दामोदर, स्वर्णरेखा और बराकर—जीवन को दिशा देती हैं। नेतरहाट की ऊँचाइयाँ और पारसनाथ की शांत पर्वत-श्रृंखलाएँ झारखंड की आत्मा को स्थिरता प्रदान करती हैं। घने जंगल, साल और सागौन के वृक्ष, और लाल मिट्टी की सौंधी खुशबू इस राज्य को विशिष्ट बनाती है।

राष्ट्रीय विकास में झारखंड का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कोयला, लौह अयस्क, अभ्रक और अन्य खनिजों ने भारत के औद्योगिक विकास को ऊर्जा दी है। देश की कई बड़ी फैक्ट्रियाँ और बिजली संयंत्र झारखंड की धरती से निकले संसाधनों पर निर्भर हैं, फिर भी यह राज्य सादगी और संघर्ष का प्रतीक बना रहा है।

झारखंड की लोक-संस्कृति इसकी आत्मा है। मुंडा, संथाल, हो और उरांव जैसे जनजातीय समुदायों की जीवनशैली प्रकृति के साथ संतुलन सिखाती है। उनके नृत्य, मांदर की थाप, पर्व-त्योहार और सामूहिक जीवन यह दर्शाते हैं कि आधुनिकता के बिना भी जीवन पूर्ण हो सकता है। यहाँ की लोककथाएँ और गीत पीढ़ियों से जंगल, नदी और मनुष्य के रिश्ते को जीवित रखते आए हैं।

झारखंड की एक और खास पहचान उसकी लोककथाएँ और लोकगीत हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ते आए हैं। इन कहानियों में जंगल, पशु, नदी और मनुष्य के बीच गहरा रिश्ता दिखाई देता है। झारखंड के गाँवों में आज भी सामूहिकता जीवित है, जहाँ सुख-दुख अकेले का नहीं बल्कि पूरे समाज का होता है। यही कारण है कि झारखंड को छोड़कर जाने वाला हर व्यक्ति भीतर ही भीतर इस धरती की खामोश पुकार को महसूस करता रहता है।

मैं इसी राज्य से हूँ। आज भले ही पढ़ाई या काम के कारण इससे दूर हूँ, लेकिन झारखंड की शांत सुबहें, मिट्टी से जुड़ा अपनापन और लोगों की सादगी बहुत याद आती है। शहरों की तेज़ रफ्तार में रहते हुए भी, मन कहीं न कहीं उसी धरती की ओर लौटना चाहता है, जहाँ जीवन धीरे चलता है लेकिन अर्थ से भरा होता है।

झारखंड सिर्फ़ मेरा राज्य नहीं, मेरी जड़ है।
यह वह धरती है जहाँ मिट्टी बोलती है,
जहाँ जंगल याद दिलाते हैं कि इंसान प्रकृति
का स्वामी नहीं,
बल्कि उसका एक छोटा-सा हिस्सा है।

ओडिशा की कला

श्री रश्मि रंजन सामंतराय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ओडिशा भारत का एक ऐसा राज्य है जहाँ कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन-शैली का हिस्सा है। यहाँ की कला में प्राचीन परंपराएँ, धार्मिक आस्था और लोकजीवन का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। ओडिशा की कला ने सदियों से भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है और आज भी अपनी मौलिकता बनाए हुए है।

ओडिशा की दृश्य कला में मंदिर स्थापत्य का विशेष स्थान है। भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के मंदिर पत्थरों पर उकेरी गई मूर्तिकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन मूर्तियों में देवी-देवताओं के साथ-साथ नर्तक, संगीतकार और सामान्य जनजीवन के दृश्य भी अंकित हैं। कोणार्क का सूर्य मंदिर कला और विज्ञान के अद्भुत संतुलन का प्रतीक माना जाता है।

लोक एवं पारंपरिक चित्रकला में पट्टचित्र ओडिशा की पहचान है। यह चित्रकला प्राकृतिक रंगों से कपड़े या ताड़पत्र पर बनाई जाती है। इसमें जगन्नाथ संस्कृति, पौराणिक कथाएँ और लोककथाएँ प्रमुख विषय होती हैं। रघुराजपुर जैसे गाँव आज भी इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।

नृत्य और संगीत भी ओडिशा की कला का अभिन्न अंग हैं। ओडिशी नृत्य अपनी कोमल भंगिमाओं, त्रिभंगी मुद्रा और भावपूर्ण प्रस्तुति के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। यह नृत्य मंदिरों में सेवा के रूप में विकसित हुआ और धीरे-धीरे शास्त्रीय स्वरूप में स्थापित हुआ। साथ ही, लोकनृत्य जैसे छऊ और संबलपुरी नृत्य ग्रामीण जीवन की ऊर्जा और उत्साह को दर्शाते हैं।

हस्तशिल्प के क्षेत्र में ओडिशा की पहचान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। पिपिली की एप्लीक कारीगरी, कटक की चाँदी की तारकशी, मयूरभंज की पत्थर और लकड़ी की नक्काशी यहाँ के कारीगरों की कुशलता को दर्शाती है। संबलपुरी और बोमकाई साड़ियाँ रंगों और डिज़ाइनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

ओडिशा की कला केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि आज भी जीवंत और विकसित होती परंपरा है। यह कला ओडिशा की सांस्कृतिक आत्मा को अभिव्यक्त करती है और भारतीय कला-जगत को निरंतर प्रेरणा देती रहती है।

दक्षिण ओडिशा की गोद में: आस्था और प्रकृति का एक अविस्मरणीय सफर

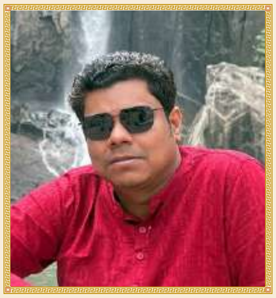

श्री नरेंद्र दास
लेखापरीक्षक

कहते हैं कि यात्राएं केवल दूरियां तय करने के लिए नहीं, बल्कि खुद को खोजने और प्रकृति की सुंदरता को करीब से महसूस करने के लिए होती हैं। इसी उद्देश्य के साथ, हमने अपनी एक ऐसी ही यादगार यात्रा की शुरुआत की, जिसने हमें न केवल मानसिक शांति दी बल्कि हमारे राज्य ओडिशा की उन अनकही और अनसुनी खूबसूरतियों से रूबरू कराया, जो किसी जन्नत से कम नहीं हैं।

सफर की शुरुआत: रात का रोमांच

23 जनवरी 2026 की सर्द रात, जब पूरी दुनिया गहरी नींद में थी, हम दोस्तों की टोली रात 11 बजे 'न्यू एजी कॉलोनी, भुवनेश्वर' से अपनी मंजिल की ओर निकल पड़े। गाड़ी में बजते गाने और दोस्तों के हंसी-मजाक ने रात के सफर को बेहद रोमांचक बना दिया था। हमारी मंजिल थी—दक्षिण ओडिशा का गौरव।

तप्तपानी: औषधीय जल का स्पर्श

24 जनवरी की तड़के सुबह करीब 5 बजे, जब सूरज की पहली किरण ने अभी दस्तक भी नहीं दी थी, हम तप्तपानी पहुँच चुके थे। गंजाम जिले के बरहामपुर से लगभग 87 किमी दूर स्थित यह स्थान अपने प्राकृतिक सल्फर युक्त गर्म पानी के झरनों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

यहाँ की खास बात यह है कि इस पानी में औषधीय गुण माने जाते हैं, जो त्वचा रोगों और जोड़ों के दर्द में राहत देते हैं। हमने वहां पुरुषों और महिलाओं के लिए बने अलग-अलग टैंकों में इस गुनगुने, खनिज युक्त पानी में स्नान किया। कड़कड़ाती सुबह में उस गर्म झरने का अहसास शब्दों में बयां करना नामुमकिन है। चारों ओर फैली हरियाली और पहाड़ियों ने इस अनुभव को और भी जादुई बना दिया था।

जीरांग: ओडिशा का 'मिनी तिब्बत'

तप्तपानी से तरोताजा होकर हम सुबह 8 बजे गजपति जिले के जीरांग पहुँचे। इसे 'ओडिशा का मिनी तिब्बत' कहा जाता है। यहाँ का पद्म संभव महाविहार पूर्वी भारत का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। 2010 में दलाई लामा द्वारा उद्घाटित यह 5 मंजिला मठ ओदंतपुरी वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है।

23 फीट की भगवान बुद्ध की प्रतिमा और गुरु पद्मसंभव की 17 फीट की स्वर्ण-मंडित नक्काशी को देखना एक आध्यात्मिक अनुभव था। 1960 के दशक में बसे तिब्बती शरणार्थियों ने इस जगह को 'फुंट्सोकिलिंग' (खुशी और प्रचुरता की भूमि) का नाम दिया है। शांत वातावरण, मठ में मंत्रोच्चार करते भिक्षु और पास का तिब्बती मार्केट, जहाँ ऊनी कपड़ों की भरमार थी, हमें एक अलग ही दुनिया में ले गया।

मंकड़ाडियां जलप्रपात: प्रकृति की गोद में शांति

नाश्ता करने के बाद हमारा अगला पड़ाव था मंकड़ाडियां जलप्रपात। सुबह 10:30 बजे हम वहां पहुँचे। गजपति जिले के पूर्वी घाट में स्थित यह 100 फीट ऊँचा झरना बेहद मनोरम है। "मंकड़ा" यानी बंदर और "डियां" यानी कूदना—इसके नाम के पीछे यहां का दुर्गम लेकिन रोमांचक ट्रेकिंग मार्ग है।

यह जगह मुख्य पर्यटन स्थलों से दूर होने के कारण बहुत शांत है। हमने झरने के ठंडे और साफ पानी के नीचे प्राकृतिक 'शावर' का आनंद लिया। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह स्थान किसी वरदान से कम नहीं है। घने जंगलों के बीच गिरता हुआ पानी और वहां की ताजी हवा ने हमारी सारी थकान मिटा दी।

गंडाहाती: एक बारहमासी अजूबा

दोपहर का भोजन करने के बाद, हम गंडाहाती जलप्रपात की ओर बढ़े। मंकड़ाडियां से गंडाहाती का रास्ता पहाड़ियों, घुमावदार घाट रोड और पर्वत दर्रों से भरा था। दोनों ओर के दृश्य इतने सुंदर थे कि पलक झपकाना भी मुश्किल था। महेंद्रतनया नदी पर स्थित यह झरना अपनी निरंतरता के लिए जाना जाता है। अर्जुन, पियासल और महुआ के घने पेड़ों से घिरा यह स्थल फोटोग्राफी के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है।

परलाखेमुंडी: इतिहास के पन्नों से

शाम होते-होते हम परलाखेमुंडी पहुँचे, जो गजपति जिले का मुख्यालय है। यह शहर ओडिशा के इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। 1885 में स्थापित यह नगर पालिका ओडिशा राज्य के गठन का केंद्र रही है। हमने ऐतिहासिक गजपति पैलेस और महेंद्र तनया नदी के तटों का भ्रमण किया। महाराजा कृष्ण चंद्र गजपति के योगदान और यहाँ की समृद्ध संस्कृति को महसूस करते हुए हमने रात वहीं एक होटल में विश्राम किया।

महेंद्रगिरि: पौराणिक कथाओं और बादलों का संगम

25 जनवरी की सुबह 4:30 बजे, हम महेंद्रगिरि के लिए निकले। सुबह 6 बजे जब हम चोटी पर पहुँचे, तो नज़ारा अद्भुत था। 1501 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह ओडिशा की दूसरी सबसे ऊंची चोटी है।

यहाँ सूर्योदय देखना हमारे जीवन के सबसे खूबसूरत क्षणों में से एक था। बादलों की चादर को चीरते हुए सूरज की सुनहरी किरणें जब प्राचीन मंदिरों और जंगलों पर पड़ीं, तो पूरा दृश्य 'स्वर्ण नगरी' जैसा लगने लगा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, यहाँ पांडवों और भगवान परशुराम ने समय बिताया था। रामायण और पुराणों में वर्णित यह 'कुल पर्वत' जैव विविधता का भी भंडार है।

मां बालकुमारी मंदिर: 1240 सीढ़ियों का संकल्प

महेंद्रगिरि से उतरकर हम चिकिटी के पास बालकुमारी मंदिर पहुँचे। केरलडीमाला पर्वत की चोटी पर स्थित इस मंदिर तक पहुँचने के लिए हमने 1240 सीढ़ियां चढ़ीं। हालांकि सीढ़ियां ढकी हुई थीं, फिर भी चढ़ाई चुनौतीपूर्ण थी, लेकिन ऊपर से मिलने वाले शहर के पैनोरमिक दृश्य ने सारी मेहनत सफल कर दी। मां बालकुमारी को दुर्गा का उग्र रूप माना जाता है। पहाड़ की तलहटी में स्थित विशाल शिवलिंग भी आकर्षण का केंद्र था।

तारा तारिणी: सफर का आध्यात्मिक अंत

अपनी यात्रा के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ते हुए हमने बरहामपुर के बाजार से प्रसिद्ध अचार और पापड़ खरीदे। शाम को हम मां तारा तारिणी मंदिर पहुँचे। ऋषिकुल्या नदी के तट पर कुमारी पहाड़ियों पर स्थित यह मंदिर भारत के चार प्रमुख 'आदि शक्ति पीठों' में से एक है।

हमने रोपवे के जरिए मुख्य मंदिर तक की यात्रा की। कामाख्या और विमला मंदिर की तरह ही इसका महत्व सर्वोपरि है। संध्या आरती के समय वहां की ऊर्जा और दिव्यता ने हमें भक्ति भाव से भर दिया।

निष्कर्ष

यह यात्रा केवल घूमने-फिरने तक सीमित नहीं थी; यह ओडिशा की कला, संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक वैभव का एक अनूठा संगम था। गंजाम और गजपति जिलों की इन वादियों में बिताए वो दो दिन हमारी यादों में हमेशा ताज़ा रहेंगे।

अगली बार जब आप छुट्टियों का प्लान बनाएं, तो दक्षिण ओडिशा की इन खूबसूरत जगहों को अपनी लिस्ट में जरूर शामिल करें।

आपस में प्रेम सबसे बड़ा है

श्री आशीष सतपथी
लिपिक

आपस में प्रेम सबसे बड़ा है,
न इसकी कोई जाति होती है,
न धर्म की सीमाएँ इसे बाँधें,
यह दिल से दिल तक जाती है।

जहाँ प्रेम है, वहाँ भय नहीं,
न ऊँच-नीच का कोई भेद।
एक सच्ची नज़र, एक कोमल हाथ,
बन जाते हैं जीवन का वेद।

न मंदिर, मस्जिद, गिरजा पूछे,
कहाँ इसका सच्चा घर।
प्रेम तो बस वहीं ठहरता है,
जहाँ इंसानियत हो प्रखर।
दुखी को ढाढ़स देना प्रेम है,
गिरते को थाम लेना।
बिना स्वार्थ जो साथ निभाए,
वही प्रेम को पहचान देना।

आज यही संदेश जरूरी है—
मानवता सबसे महान।
जाति-धर्म से ऊपर उठकर,
प्रेम बने हमारी पहचान।

ऑडिटर का जीवन

श्री सुब्रत कुमार घड़ई
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ऑडिटर का जीवन बड़ा निराला,
फ़ाइलों संग दिन भर का नाता।
सुबह रजिस्टर, शाम रिपोर्ट,
बीच में चाय ही दे जाती राहत।

काग़ज़ कहते—"सब व्यवस्थित",
वाउचर भी रखते मौन विचार।
ऑडिटर बस मुस्कान के संग,
पूछता है एक-दो सरल सवाल।

कभी तारीख़ ढूँढते-ढूँढते,
समय निकल जाता चुपचाप।
कभी पेन की स्याही कम हो,
तो टिप्पणी रुक जाती बीच राह।
हर रिपोर्ट में मेहनत बोले,
हर पैरा कहे ईमान।
शोर न करे, चर्चा न चाहे,
बस निभाए अपना काम।

कहने को यह जीवन साधारण,
पर इसकी अपनी पहचान।
ऑडिटर हँसते-हँसते सिखाता—
नियम भी हो सकते हैं आसान।

जगन्नाथ सबके हैं

स्व. कुमार महापात्र
एम टी एस

जगन्नाथ सबके हैं,
न कोई छोटा, न कोई बड़ा।
भक्त जहाँ से भी आए,
उसका स्वागत है सदा।
न जाति पूछे, न कुल देखे,
न भाषा बने दीवार।
प्रेम से जो सिर झुकाए,
वही उसका अधिकार।
नीलांचल की पावन धरा पर,
बहती करुणा की धारा।
राजा हो या साधारण जन,
सबका पथ एक ही द्वारा।
रथ चले तो संग चले,
आस्था, विश्वास, अपनापन।
हाथों में हाथ, मन में भाव,
यही है उसका सच्चा वचन।
जगन्नाथ सबके हैं—
यह सिखलाए जग को बात।
मानवता ही सबसे ऊपर,
यही प्रभु का संदेश साथ।

मेरा नृत्य ओडिशी

सुश्री आश्रिता महापात्र
सुपुत्री- श्री अमरेंद्र महापात्र, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा नृत्य ओडिशी, मेरी पहचान,
माटी की खुशबू, मंदिर का गान।
घुँघरुओं की रुनझुन जब छेड़े तान,
हृदय से निकलता भक्ति का ध्यान।
त्रिभंगी की लय में झुका जब अंग,
भावों में बहता मधुर सा रंग।
आँखों की भाषा, भंगिमा की बात,
कह जाती मन की हर एक सौगात।
ताल की धड़कन, पखावज का स्वर,
शरीर नहीं, आत्मा नाचे हर पल।
शिव का तांडव, कृष्ण की लीला,
हर मुद्रा में बसता गीत रंगीला।
मेहनत, साधना, गुरु का वरदान,
हर अभ्यास में छुपा है सम्मान।
पसीने की बूँदें, तप की निशानी,
नृत्य बनी मेरी जीवन-कहानी।
ओडिशी केवल कला नहीं,
यह साधना है, पूजा सही।
जब मंच पर उतरती हूँ मुस्कान,
मेरा नृत्य ओडिशी—मेरा अभिमान।

अस्मिता, विचार और अज्ञान का द्वंद्व

श्रीमती तृप्तिमाई बारिक

पत्नी- श्री आसिस कुमार बारिक, लेखापरीक्षक

पिछले कुछ वर्षों में ओडिशा में 'अस्मिता' शब्द शब्दकोश के पन्नों से निकलकर रोजमर्रा के जीवन और राजनीति का केंद्र बन गया है। विधानसभा में भी इसे लेकर वाद-विवाद होता ही रहता है। पक्ष-विपक्ष एक-दूसरे पर इसके दुरूपयोग का आरोप लगाते रहे हैं।

'अस्मिता' शब्द का अर्थ 'अस्मि' यानी 'मैं हूँ' से आया है। अर्थ 'अस्तित्व', 'अहंकार', 'आत्म-जागरूकता' और 'व्यक्तित्व' है। जहाँ मन, अहंकार और इंद्रियों को वश में कर शुद्ध चेतना की ओर बढ़ जाता है। हालांकि, इसे एक 'क्लेश' (बाधा) भी माना गया है जिसे पार करना आवश्यक है। अस्मिता सकारात्मक (आत्मसम्मान) और नकारात्मक (अहंकार) दोनों हो सकता है। इसे समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि 'अस्मिता क्या नहीं है'।

उदाहरण के तौर पर, एक विजयी राजा जब दूसरे बंदी राजा से पूछा कि "उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए", तो उसने उत्तर दिया, "जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है"। यह आत्मसम्मान (अस्मिता) का बेहतरीन नमूना है। हिटलर द्वारा खुद को श्रेष्ठ मानकर दूसरों का विनाश करना अस्मिता नहीं, बल्कि आत्म-मुग्धता और क्रुरता थी। अस्मिता को स्पष्ट करते हैं, दूसरों का अपमान करना या अधिकारों का हनन करना 'अस्मिता' नहीं बल्कि 'अहंकार' है। यदि दुर्योधन युद्ध में जीत भी जाता, तो वह उसकी अस्मिता की जीत नहीं होती बल्कि अहंकार की जीत होती।

जगन्नाथ संस्कृति में श्री जगन्नाथ मंदिर की गरिमा और परंपराओं की रक्षा ओड़िया अस्मिता का मूल है। विकास के नाम पर प्राचीन मठों और ऐतिहासिक संरचनाओं को नष्ट करना अस्मिता का परिचय नहीं है। बंगाली या अन्य भाषाई वर्चस्व के खिलाफ ओड़िया भाषा की रक्षा करना अस्मिता का हिस्सा है। लेकिन अपनी भाषा को श्रेष्ठ बताने के लिए दूसरी भाषा का तिरस्कार करना अस्मिता नहीं है। जिन्होने एक वोट से हार स्वीकार की, लेकिन सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। वही, सत्ता पाने के लिए अनैतिक कार्य करना अस्मिता के नहीं है।

अस्मिता ये है कि, ओडिया होकर ओड़िया भाषा में बात न करना, ओड़िया साहित्य न पढ़ना और अपनी संस्कृति को हीन समझना अस्मिता की कमी को दर्शाता है। अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति ममता न रखने वाला व्यक्ति खुद को श्रेष्ठ नहीं मान सकता। अस्मिता विहीन व्यक्ति पशु के समान है।

अस्मिता का अर्थ दूसरों को नीचा दिखाना या केवल सत्ता हासिल करना नहीं है। यह अपने गौरव, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक जड़ों के प्रति सच्ची निष्ठा है। सच्ची ओड़िया वही है जो अपनी भाषा, धर्म और संस्कृति का सम्मान करते हुए दूसरों के प्रति भी गरिमापूर्ण व्यवहार रखे। अपने धर्म (कर्तव्य) का पालन करते हुए मृत्यु भी स्वीकार है, बजाय इसके कि हम अपनी जड़ें छोड़कर दूसरों का अनुसरण कर रहे हैं। यह स्पष्ट है कि अस्तित्व की रक्षा केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन से होती है। जब विचार और विनम्रता साथ-साथ चलते हैं, तभी मनुष्य सच्चे अर्थों में विकसित होता है।

अंततः प्रश्न यही है कि, क्या हम अपने विचारों का बड़ा बनाना चाहते हैं, या अपने अहंकार को ?

विद्यार्थी और मोबाइल

श्री साई आशीष दास
पुत्र- श्री प्रज्ञामय देवदत्त दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हाथों में सिमटा छोटा सा संसार,
आँखों से ओझल होता ज्ञान अपार।
मोबाइल की चमक में खोया बचपन,
किताबें पूछें—क्यों हुआ हमसे अनजानापन?
सुबह की धूप, शाम की हवा,
सबको पीछे छोड़ गया यह नशा।
खेल-कूद छूटी, संवाद भी टूटा,
स्क्रीन में उलझा हर सपना रूठा।
रातें जागते, नींद हुई दूर,
थकी आँखों में भविष्य अधूरा।
ज्ञान की राह पर जब चलना था,
रील्स और गेम्स में मन फिसलना था।
चुप बैठा बच्चा, पर शोर भीतर,
तनाव, चिड़चिड़ापन—सब रहते इधर।
सोचने की शक्ति हुई कमजोर,
नकल बनी सहारा, मेहनत हुई बेकार।
मोबाइल साधन है, लक्ष्य नहीं,
सीमा में रहे तो देता सही।
विद्यार्थी समझे समय का मान,
तभी उज्ज्वल होगा उसका कल महान।

किस पर विश्वास करें

श्री आसिस कुमार बारिक
लेखापरीक्षक

एक बार सोचो किस पर विश्वास करें
अस्थिर लहर पर या स्थिर पहाड़ पर
चले जा रहे राहगीर पर या ठहर गए बरगद पर
छूई हुई मिट्टी पर या अनछुए आकाश पर
पत्नी की इच्छा पर या प्रेमिका की ईर्ष्या पर
आसक्त मनुष्य पर या अनासक्त ईश्वर पर
देह की परछाई पर या परछाई की देह पर
धर्म, ज्ञान, शास्त्र, गुरू, शब्द और मंत्र पर

ये सब एक-एक मुखौटे हैं
जो दिखाई देते हैं दर्पण के सामने
केवल तुम ही विश्वास कर सकते हो
अपने उस चंचल, अनियंत्रित मन पर
वही है जो है, देखता है और ढूँढता है,
सारे संसार के कोलाहल के बीच।
और वही तुम्हे लौटा सकता है।
तुम्हारे अंतर्मन तक, अगर तुम स्वयं चाहो तो।

मेरे पापा

सुश्री दिग्दर्शिनी मिश्रा
सुपुत्री- श्री जयकृष्ण मिश्रा , वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मेरे पापा ए.जी. में ऑडिटर हैं,
टूर पर अक्सर चले जाते हैं।

फाइलें, बैग और मुस्कान लेकर,
सुबह-सुबह घर से निकल जाते हैं।

मैं खिड़की से उनको देखती हूँ,
मन में थोड़ी उदासी भर जाती हूँ।

पापा दूर हैं, पर याद आते हैं,
मेहनत से सपने मेरे सजाते हैं।

टूर से जब पापा लौट आते हैं,
घर फिर से खुशियों से भर जाते हैं।

हमारे ऑफिस का प्यारा बगीचा

सुश्री आंचल
लेखापरीक्षक

हमारे ऑफिस के आगे-आगे,
एक बगीचा प्यारा-प्यारा।
लाल, पीले, नीले फूल,
करते सबका मन उजियारा।
तितली आए, भौंरे गाएँ,
हरियाली मुस्कान बिखेरे।
सुबह-सुबह जब सूरज आए,
ओस चमके जैसे हीरे।
यह बगीचा हमें सिखाए,
सफाई, मेहनत और प्यार,
काम के संग खुशियाँ भी हों,
यही है इसका उपहार।

यह जिंदगी बहुत मुश्किल है लेकिन मैं आगे बढ़ता रहूँगा

श्री सलमान टुडू
पुत्र- श्री जेना राम टुडू, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

टूटे कांच और धुंधले सपनो के बीच,
मुझे एक ऐसी जगह मिलती है
जहाँ से मैं चीख सकू,
यह दर्द बहुत बड़ा है
और मुझ पर हावी हो जाता है ,
मुझे तिपतिया घांस की खूशबू नहीं आती,
मैं घुटनों के बल बैठकर
अपनी नियामतें गिनता हूँ,
क्योंकि कभी-कभी जिंदगी
बहुत परेशान करने वाली होती है,
मैं हर मुश्किल पल से गुजरता हूँ
यह सोचकर कि मैं अभी भी इसमें हूँ,
खुद को खुशनसीब महसूस करता हूँ,
यह जिंदगी मुश्किल है
लेकिन में आगे बढ़ता रहूँगा ।
यह मेरी आत्मा की यात्रा है
जिस पर मुझे चलना है,
मैं अपने मन की आँखों से देखता हूँ,
कभी सवाल नहीं करता
या पूछता नहीं की क्यों ,
मुझे पता है कि मेरे साथ
जो कुछ भी होता है,
वह मुझे सिखाने और
आजाद करने के लिए है,
जिंदगी को हलके में लेना
अच्छी बात नहीं है,
सोचने और रुकने के लिए
एक गहरी सांस लों,
मैं मजबूत और समझदार हूं ,
मुझे पता है कि मैं अच्छे इरादे से जीता हूँ।
जो बेड़ियाँ मैंने कभी पहनी थी,
अब मुझे रोक नहीं सकती,
मैं आजाद हूँ और अपने पंख फैलाकर उड़ता हूँ,
हर चीज की कद्र करता हूँ,
मैं जैसा हूँ वैसा ही रहता हूँ
अपनी बहादुरी पर मैं खड़ा हूँ।

कोरापुट से चित्रकूट तक
(मित्रों संग यात्रा-काव्य)

श्री सोनुपु सत्यनारायण
लेखापरीक्षक

कोरापुट से चित्रकूट तक
(मित्रों संग यात्रा-काव्य)

जुलाई 2024 की वो सुबह याद आती है,
जब ऑफिस की फाइलें मेज़ पर छोड़,
मैंने छुट्टी के काग़ज़ों में
थोड़ी-सी आज़ादी साइन की थी।
मन में बस एक ख्वाहिश थी—
दोस्तों के साथ कहीं दूर निकल जाना।

भुवनेश्वर स्टेशन से
जब ट्रेन ने सीटी दी,
तो लगा जैसे ज़िंदगी ने
रीसेट बटन दबा दिया हो।
खिड़की से भागती पटरियाँ,
हँसते दोस्त और चाय की भाप—
सफर यूँ ही यादगार बनने लगा।

पहाड़ों की गोद में बसे कोरापुट ने
हमें बाहें फैलाकर अपनाया।
दो दिन वहाँ रुके,
पर लगा जैसे वक़्त ठहर गया हो।
हर मोड़ पर हरियाली,
हर सांस में सुकून था।

देओमाली की चोटी पर खड़े होकर
हमने बादलों को नीचे चलते देखा।
हवा ठंडी थी,
पर दिलों में जोश भरा था।
वो पल सिखा गया—
ऊँचाई सिर्फ पहाड़ों में नहीं,
हौसलों में भी होती है।

दुदुमा जलप्रपात का गिरता पानी
सीधे दिल पर उतरता था।
शोर में भी शांति थी,
और शांति में भी एक आवाज़—
जीवन बहता रहता है,
बस बहाव को महसूस करना आना चाहिए।

कोरापुट की गलियों,
उसके बाज़ार,
और सादे लोगों की मुस्कान में
कुछ अपनापन था।
हम सात-आठ जगह घूमे,
पर असल में
खुद से मिलते चले गए।

फिर सफर आगे बढ़ा,
कोरापुट से छत्तीसगढ़ की ओर।

रास्ता नया था,
पर साथी वही पुराने।
चित्रकूट पहुँचे,
जहाँ झरना नहीं,
मानो प्रकृति का उत्सव बह रहा था।

तीरथगढ़ जलप्रपात पर
पानी के साथ
हमारी सारी थकान भी गिर पड़ी।
वो जगह बता रही थी—
प्रकृति कभी जल्दी में नहीं होती,
फिर भी सब कुछ पूरा कर लेती है।

जगदलपुर की शाम
कुछ उदास सी थी,
क्योंकि वापसी का वक़्त आ गया था।
ट्रेन से भुवनेश्वर लौटते हुए
खामोशी ज़्यादा थी,
शायद यादें भारी थीं।

ऑफिस की छुट्टी खत्म हो गई,
पर मन अभी भी
पहाड़ों और झरनों में अटका है।
ये यात्रा सिर्फ घूमना नहीं थी,
ये खुद को फिर से
ज़िंदा महसूस करना था।

कोरापुट से चित्रकूट तक का सफर
डायरी में नहीं,
सीधे दिल में दर्ज हो गया।
जब भी ज़िंदगी भारी लगेगी,
मैं जुलाई 2024
और दोस्तों की हँसी
याद कर लिया करूँगा।

राष्ट्र-चिंतन

श्री संजीव कुमार यादव
वरिष्ठ अनुवादक

"अब समय आ गया है, भारत के विश्वगुरू बनने का !"

जी हाँ, वह समय आ गया है जब भारत को अपनी मानसिक परिधि को और अधिक विस्तारित करना होगा। एक राष्ट्र के उत्थान के लिए जिन गुणों की अपरिहार्य आवश्यकता है- वे सब अब नव-भारत में हैं। भारत के युवाओं में प्रबल इच्छा शक्ति है- और यह सम्पत्ति उनकी दीर्घकाल की शक्ति-पूजा का परिणाम है। अब समय की मांग है कि युवाओं को ऐसे ज्ञान और चिंतन के केंद्र की सृष्टि करना होगा, जो सम्पूर्ण राष्ट्र की चिंतन शक्ति में आमूल-चूल परिवर्तन ला देगा। हमारे देश के युवाओं को एक नए मस्तिष्क की भी आवश्यकता है, और उस मस्तिष्क को त्रुटिहीन एवं परिपूर्ण रीति से कार्य करने के लिए प्रभूत परिणाम में ज्ञान की भी आवश्यकता है।

प्रायः यह कहा जाता है कि देश के विकास का केंद्र इसकी शिक्षा बिंदु है। पिछले कुछ वर्षों में विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में ऐसी शिक्षा व्यवस्था रही है, जो मानव के मनस तत्व की उपेक्षा करती रही है। अब समय आ गया है कि शिक्षा व्यवस्था को इस प्रकार दुरूस्त करें कि आने वाली पीढ़ी में राष्ट्रीयता की भावना उसके नस-नस में समाहित हो। हालांकि नई शिक्षा पद्धति में जिस प्रकार सूचनाप्रद ज्ञान के अतिरिक्त तकनीक व कौशल विकास पर बल दिया जा रहा है, वह निश्चय ही विद्यार्थियों की मानसिक परिधि को मजबूती प्रदान करेगा। जिस देश में विकास के सभी पहलुओं को रेखांकित करते हुए छात्रों के हित में मातृभाषा पर जोर दिया जा रहा है, वहाँ के युवा निश्चय ही हर अभियान में विजयी पताका लहराएंगे।

जिस भारत ने अपनी नैतिक और मानसिक दीनता के कारण विदेशियों के सामने आत्म समर्पण कर दिया था, हमें चाहिए उस प्राचीन और अधिक शक्तिमान भारत की अंतः शक्ति और अधिक कार्यकारी, और अधिक युगोपयोगी, आधुनिक, दृढ़ और संगठित रूप।

भारत के प्राचीन दर्शन को अंगीकार करके हमें अब विज्ञान में पांडित्य, विधि-विधान और न्याय के शास्त्र को फलीभूत करना सीखना होगा। प्राचीन भारत में ब्रह्मचर्य-साधना एक अवश्यमेव पालनीय व्यवस्था थी, जिसके पुल को पार कर लोग मनुष्यता को प्राप्त करते थे। मानस की अट्टालिका का शिखर यदि निर्माण करना है, तो उसके लिए पहले उसका भार वहन करने की क्षमता रखनेवाले सुदृढ़ अधिष्ठान का निर्माण आवश्यक है, अर्थात् संकल्पना से सिद्धि तक की यात्रा को पूर्ण करना।

भारत में शिक्षा व्यवस्था सूचनाओं के संग्रहण से संबंधित नहीं होनी चाहिए। क्योंकि सूचनाएं कभी भी बुद्धि का आधार नहीं हो सकतीं। जिस शिक्षा का कार्य सूचना-वितरण के अंदर सीमित है, वह शिक्षा शिक्षा ही नहीं है। स्मरण, विचार, कल्पना, अनुभूति, तर्क-वितर्क, ये सभी क्षमताएं ज्ञान रूपी पौधे का निर्माण कर सकती हैं।

शिक्षा का मूलभूत लक्ष्य हमारी मनन शक्ति के तेज को बढ़ाना है। प्राचीन काल में महापुरूषों, संतों ने अपने तेज संचय की मात्रा को परिवर्धित करने पर योग करते थे। और उनका यह उपाय ब्रहम्चर्य साधना कहलाता था। ज्ञान का अधिकांश भाग मानव अपने भीतर के उत्स से प्राप्त करता है।

हार्बर्ट स्पेन्सर के ज्ञान की परिधि को देखकर यूरोप में प्रशंसा और आश्चर्य का फव्वारा छूटता था, परंतु प्राचीन भारतवर्ष में सामान्य पाठ्यक्रम की सर्वांगीणता प्रत्येक छात्र के लिए थी, केवल दो-एक असाधारण व्यक्तियों के लिए नहीं। हमारे पूर्वजों का लक्ष्य था- प्रत्येक विषय में पूर्ण रूप से पारंगत होना। काव्य जगत में कालिदास की मौलिक रचनाधर्मिता का जो चरम उत्कर्ष

दीखता है, वह यूरोपीय मानस की सोच से भी परे है। मानवों की मानस उपलब्धि का गुप्त रहस्य है- ब्रह्मचर्य पालन और सत्वगुण।

वर्तमान युग में विश्व गुरु बनने के लिए अपरिहार्य पहल:

ज्ञान और शिक्षा: आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति और वेदों का प्रसार करना, जो दुनिया को सही दिशा दिखा सके। यहाँ ज्ञान और शिक्षा का तात्पर्य सूचनाप्रद तथ्यों तक सीमित नहीं है। ज्ञान और शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार तभी हो सकता है, जब मानव नैतिक व व्यावहारिक रूप से ईमानदार होगा। इसके साथ ही, भारतीय शिक्षा को चतुर्दिक फैलाकर "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना को सार्थक करना होगा।

स्वावलंबन एवं आर्थिक मजबूती: राष्ट्र विकास के लिए प्रत्येक मानव को स्वावलंबन के मार्ग पर चलना होगा। वैश्विक बाजार में अपनी धाक बनाने के लिए हर भारतीय को आर्थिक सशक्तिकरण के हरेक पहलुओं पर 'भागीरथ प्रयास' करना होगा। उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन योजनाओं और संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से भारत को आत्मनिर्भर बनाना होगा। भारत को चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए जी-तोड़ मेहनत करना होगा। इसके लिए श्रमिकों व कामगारों को कौशल विकास पर निरंतर प्रशिक्षण देना होगा।

तकनीकी और नवाचार: आज विश्व के जितने भी विकसित देश हैं, वे निश्चित रूप से तकनीकी व नवाचार में आगे हैं। हालांकि भारत इस क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए सतत प्रयास कर रहा है, तथापि यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें विश्व के देशों में प्रतियोगिताओं को देखते हुए तकनीकी व नवाचार को बढ़ावा देने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच मिलकर संयुक्त प्रयास करना पड़ेगा। 'मेक इन इंडिया' के तहत अनुसंधान, विकास और नई तकनीकों के क्षेत्र में अग्रणी बनना पड़ेगा।

वैश्विक नेतृत्व: वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ जलवायु परिवर्तन, शांति और अंतरराष्ट्रीय विवादों में रचनात्मक समाधान प्रदाता बनना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। एशियाई देशों के साथ बड़े भाई जैसा व्यवहार करना एवं आर्थिक व तकनीकी रूप से कमजोर देशों को उन्नत बनाने में अग्रणी भूमिका निभाना होगा। अपने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना रखते हुए भारत ने हमेशा विश्व राजनीति में एक कुशल भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों एवं विदेश नीति को आदर्शों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक नेतृत्व में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। भारत के पास स्वयं को विश्व राजनीति में वैश्विक महाशक्ति एवं विश्वगुरू के रूप में स्थापित करने का सुनहरा अवसर है।

सामाजिक विकास: समाज में समानता, स्वास्थ्य (फिट इंडिया) और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना ताकि एक आदर्श समाज का निर्माण हो। भारत विविधताओं से भरा देश है, और यही इसकी खूबसूरती भी है। सामाजिक विकास एक बहु-आयामी प्रक्रिया है, जो समावेशी विकास और बेहतर जीवन गुणवत्ता के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। भारत, जो 69% ग्रामीण आबादी वाला देश है, में सामाजिक परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं, जिसमें नगरीकरण और तकनीकी विकास की बड़ी भूमिका है। स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, और पोषण स्तर में सुधार, जैसे शिशु जीवित रहने की दर आदि पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस क्रम में समावेशी शिक्षा, प्राथमिक और उच्च शिक्षा में नामांकन और कौशल विकास की अहम भूमिका है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा समाज के सभी वर्गों, विशेषकर कमजोर और हाशिए के समुदायों के लिए शिक्षा और सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है।

सुशासन : किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में पारदर्शी और प्रभावी शासन प्रणाली विकसित करना अनिवार्य होता है। यह 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका उद्देश्य डिजिटल तकनीक (ई-गवर्नेंस) का उपयोग करके भ्रष्टाचार को कम करना और जन-केंद्रित सेवाएं प्रदान करना है। सुशासन के प्रमुख आधारभूत सिद्धांत में जवाबदेही- सरकार और प्रशासनिक संस्थानों का नागरिकों के प्रति जवाबदेह होना, पारदर्शिता- सरकारी कार्यों और सूचनाओं की जनता तक सहज पहुंच (जैसे आरटीआई), विधि का शासन- निष्पक्ष कानूनी ढांचा और मानवाधिकारों की रक्षा, समावेशिता- समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचाना, भागीदारी - निर्णय लेने की प्रक्रिया में जनता की सक्रिय भागीदारी, संवेदनशीलता- नागरिकों की शिकायतों और जरूरतों का समय पर निपटारा आदि आते हैं। अतः भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सुशासन एक अनिवार्य तत्व है।

निष्कर्ष- भारतवर्ष की गौरवशाली प्राचीन गाथा से प्रेरणा लेते हुए हम सभी भारतीयों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि राष्ट्र के सर्वांगीण व चहुंमुखी विकास के लिए, विकास के हर क्षेत्र में गुरूओं/शिक्षकों को सम्मानित करना होगा। क्योंकि जिस प्रकार चाणक्य ने चंद्रगुप्त का निर्माण कर भारत में स्वर्ण-युग लाया था, आज जरूरत है ऐसे लाखो चाणक्यों का, जो अरबों भारतीयों के विकास की नींव को सुदृढ़ कर सकें।

रामस्वामी वैरामुथु : शब्दों के जादूगर और आधुनिक तमिल साहित्य के शिल्पकार

श्रीमती रानी गिरि

पत्नी- श्री पुरुषोत्तम गिरि, वरिष्ठ अनुवादक

जब भी भारतीय फिल्म संगीत और तमिल साहित्य की चर्चा होती है, तो रामस्वामी वैरामुथु का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे केवल एक गीतकार नहीं बल्कि भावनाओं के मूर्तिकार, शब्दों के जादूगर और समाज के संवेदनशील द्रष्टा हैं। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समाज को दिशा देने का माध्यम भी हो सकते हैं।

60वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय साहित्य के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। वर्ष 2025 के लिए इस प्रतिष्ठित सम्मान की घोषणा मार्च 2026 में की गई, जिसने तमिल साहित्य को एक बार फिर राष्ट्रीय फलक पर गौरवशाली स्थान दिलाया है।

भारतीय ज्ञानपीठ चयन समिति ने प्रसिद्ध तमिल कवि, गीतकार और लेखक रामस्वामी वैरामुथु को 60वें ज्ञानपीठ पुरस्कार (वर्ष 2025) के लिए चुना है। यह निर्णय सुप्रसिद्ध लेखिका प्रतिभा राय की अध्यक्षता वाली चयन समिति द्वारा लिया गया।

रामस्वामी वैरामुथु का जन्म 13 जुलाई 1953 को तमिलनाडु के थेनी जिले के एक छोटे से गाँव मेट्टूर के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि यदि व्यक्ति में प्रतिभा, परिश्रम और दृढ़ संकल्प हो तो वह साधारण परिस्थितियों से उठकर भी असाधारण ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है। उनके पिता एक किसान थे और परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी। लेकिन कठिन परिस्थितियों ने उनके मन में संघर्ष करने की शक्ति पैदा की।

ग्रामीण परिवेश और खेती-किसानी से जुड़े उनके शुरुआती अनुभवों ने उनके लेखन की नींव रखी। उन्होंने चेन्नई के पचैयप्पा कॉलेज से तमिल साहित्य में स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।

उनका बचपन ग्रामीण वातावरण में बीता। उन्होंने खेत, नदी, वर्षा, सूखा और किसानों की मेहनत को बहुत करीब से देखा। यही कारण है कि उनके गीतों और कविताओं में प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। वे प्रकृति को केवल दृश्य के रूप में नहीं बल्कि भावनाओं के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

रामस्वामी वैरामुथु का लेखन बहुआयामी है। उन्होंने कविता, उपन्यास और गीत लेखन में समान रूप से महारत हासिल की है। साथ ही समकालीन तमिल साहित्य के सबसे प्रभावशाली हस्ताक्षर माने जाते हैं। उनका योगदान कविता, उपन्यास और सिनेमाई गीतों के त्रिवेणी संगम जैसा है।

उनकी लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने 'साहित्य' और 'सिनेमा' के बीच की दूरी को मिटा दिया। उनके गीत केवल फिल्मी गाने नहीं, बल्कि छंदबद्ध कविताएँ हैं।

साहित्यिक प्रभाव

कविताओं का दर्शन (Poetic Philosophy)- रामस्वामी वैरामुथु की कविताओं में प्रकृति, प्रेम और विज्ञान का एक अनोखा मिश्रण मिलता है। जहाँ पारंपरिक कवि केवल चाँद-तारों की बात करते थे, रामस्वामी वैरामुथु ने उनमें खगोल विज्ञान (Astronomy) को पिरोया।

प्रयोगधर्मिता- उन्होंने तमिल कविता की 'पुदुक्कविताई' (नई कविता) विधा को ऊंचाइयों पर पहुँचाया।

सामाजिक सरोकार- उनकी कविताओं में समानता की आवाज और पर्यावरण संरक्षण का संदेश छिपा होता है। वे मानते हैं कि कविता को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का आईना होना चाहिए।

सिनेमाई गीतों पर साहित्यिक प्रभाव- भारतीय सिनेमा में गीतकारों को अक्सर केवल संगीत की धुन पर शब्द बिठाने वाला माना जाता है, लेकिन रामस्वामी वैरामुथु ने इस धारणा को बदल दिया।

संगीतकार ए.आर. रहमान के साथ जुगलबंदी- मणिरत्नम की फिल्म 'रोजा' (1992) से शुरू हुआ उनका सफर विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हुआ। उनके गीतों ने तमिल भाषा की मिठास को वैश्विक पहचान दिलाई।

शुद्धता और सरलता- वे कठिन से कठिन दार्शनिक बात को भी सरल तमिल शब्दों में कह देते हैं। उदाहरण के लिए, जीवन की नश्वरता या प्रेम की गहराई को समझाने के लिए वे अक्सर प्रकृति के प्रतीकों (जैसे बारिश, मिट्टी, समुद्र) का सहारा लेते हैं।

गीत जो कविता बन गए- 'बॉम्बे', 'ताल' (तमिल संस्करण), 'कन्नाथिल मुथामित्तल' जैसी फिल्मों के उनके गीत आज भी साहित्यिक रूप से बहुत समृद्ध माने जाते हैं।

तमिलनाडु के लोग उन्हें आदर से 'कवि-पेरसु' कहते हैं, जिसका अर्थ है 'महान सम्राट कवि'। यह उपाधि उन्हें उनकी भाषाई पकड़ और जनता के बीच उनकी लोकप्रियता के कारण दी गई है।

रामस्वामी वैरामुथु ने केवल फिल्मों के लिए नहीं, बल्कि 'थमिज़ह ताई वाल्थु' (तमिल गान) और आधुनिक तमिल अस्मिता पर भी बहुत काम किया है, जिससे वे हर तमिल भाषी के दिल के करीब पहुँच गए।

साहित्यिक यात्रा और योगदान:

प्रमुख कृतियाँ- उन्होंने 37 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनके उपन्यास 'कल्लिकट्टू इतिहासम' (Kallikattu Ithikasam) को वर्ष 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। इसके अलावा 'करुवाची कावियम' और 'थन्नी देसम' उनकी कालजयी रचनाएँ हैं।

सिनेमाई जगत- वे भारतीय सिनेमा के सबसे सफल गीतकारों में से एक हैं। उन्होंने 8,000 से अधिक गीत लिखे हैं और इन्हें रिकॉर्ड 7 बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (सर्वश्रेष्ठ गीतकार) से सम्मानित किया गया है।

उपन्यास- उनका उपन्यास 'कल्लिकट्टू इतिहासम' (Kallikattu Ithikasam) तमिल साहित्य की एक महान कृति मानी जाती है। इसमें एक ऐसे किसान की व्यथा है जिसका गाँव बांध निर्माण के कारण डूब जाता है। इस कृति के लिए उन्हें वर्ष 2003 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

कविता- उनकी कविताओं में मिट्टी की सोंधी महक और आधुनिकता का अनूठा संगम है। 'एन्ता एझुथु' और 'पायणी' जैसे कविता संग्रहों ने उन्हें एक गंभीर कवि के रूप में स्थापित किया।

लेखन की विशेषताएँ:

रामस्वामी वैरामुथु के लेखन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ उन्हें अन्य साहित्यकारों से अलग बनाती हैं:

सामाजिक यथार्थवाद- वे केवल कल्पनाओं में नहीं खोते, बल्कि समाज की कड़वी सच्चाई, विस्थापन का दर्द और ग्रामीण जीवन के संघर्ष को पूरी प्रखरता से लिखते हैं।

वैज्ञानिक चेतना- उनकी कविताओं में अक्सर विज्ञान और तर्क का पुट मिलता है, जो तमिल कविता की पारंपरिक शैली में एक नया प्रयोग था।

मिट्टी से जुड़ाव- वे अक्सर अपनी रचनाओं में 'वेट्टागाडु' (सूखी भूमि) और वहाँ के लोगों के जुझारूपन का चित्रण करते हैं।

सम्मान और उपलब्धियाँ:

रामस्वामी वैरामुथु को उनके साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के लिए अनेक शीर्ष सम्मानों से सम्मानित गया है:-

ज्ञानपीठ पुरस्कार (2025): उनके समग्र साहित्यिक योगदान के लिए।

पद्म भूषण (2014) और पद्म श्री (2003): भारत सरकार द्वारा नागरिक सम्मान।

साहित्य अकादमी पुरस्कार (2003): उपन्यास 'कल्लिकट्टू इतिहासम' के लिए।

डॉक्टरेट की मानद उपाधि: विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा उनके भाषाई ज्ञान के लिए।

रामस्वामी वैरामुथु का उपन्यास 'कल्लिकट्टू इतिहासम' (Kallikattu Ithikasam) केवल एक कहानी नहीं, बल्कि विस्थापन और संघर्ष की एक मार्मिक महागाथा है।

यह उपन्यास 1950 के दशक के तमिलनाडु की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जब थेनी जिले में वैगई बांध (Vaigai Dam) का निर्माण हो रहा था।

मुख्य कथानक- कहानी 'मोक्का रासू' नामक एक वृद्ध किसान और उसके परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। जब सरकार बांध बनाने का निर्णय लेती है, तो मोक्का रासू के पुश्तैनी गाँव और खेतों को खाली करने का आदेश दिया जाता है।

मिट्टी से जुड़ाव- उपन्यास इस बात को गहराई से दिखाता है कि एक किसान के लिए उसकी जमीन केवल संपत्ति नहीं, बल्कि उसकी पहचान और आत्मा होती है। अपनी जड़ों से उखड़ने का दर्द क्या होता है, यह रामस्वामी वैरामुथु ने बेहद सजीव तरीके से चित्रित किया है।

प्रकृति और विकास का संघर्ष- लेखक ने यहाँ एक बड़ा सवाल उठाया है—क्या 'विकास' (बांध) की कीमत उन गरीब ग्रामीणों के आँसुओं से चुकाई जानी चाहिए जिन्हें अपनी ही धरती से बेदखल कर दिया जाता है ?

सांस्कृतिक धरोहर- इस उपन्यास में तमिलनाडु की लोक संस्कृति, मुहावरों और ग्रामीण जीवन की बारीकियों का बहुत सुंदर प्रयोग किया गया है, जिसके लिए इसे वर्ष 2003 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

इस उपन्यास की सफलता के कारण:-

यथार्थवाद- यह एक वास्तविक घटना पर आधारित है, जिससे पाठक खुद को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं।

भाषा शैली- रामस्वामी वैरामुथु ने 'कलि' (कांटेदार झाड़ियाँ) और बंजर भूमि के रूपक का उपयोग करके जीवन की कठोरता को दर्शाया है।

भावुकता- यह उपन्यास पढ़ने वाले की आँखों में आँसू ला देने की क्षमता रखता है।

निष्कर्ष

रामस्वामी वैरामुथु केवल एक लेखक या गीतकार नहीं हैं, बल्कि वे तमिल संस्कृति के एक जीवित दस्तावेज हैं। उनके साहित्य में प्राचीन तमिल गौरव और आधुनिक भारत की चुनौतियों का सुंदर समन्वय मिलता है। 60वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना न केवल उनके पांच दशकों के कठिन परिश्रम का फल है,

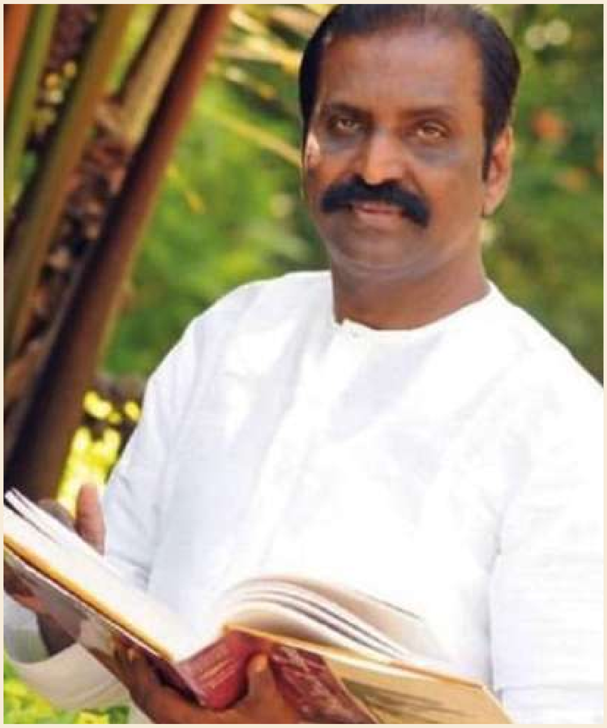

बल्कि यह इस बात का भी प्रमाण है कि क्षेत्रीय भाषा का सशक्त साहित्य ही वैश्विक संवेदनाओं को छू सकता है।

60वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार न केवल रामस्वामी वैरामुथु की व्यक्तिगत मेधा का सम्मान है, बल्कि यह तमिल भाषा की समृद्ध और जीवंत परंपरा की भी स्वीकृति है। उनके लेखन में ग्रामीण जीवन की सोंधी महक, मानवीय संवेदनाएं और सामाजिक सरोकार स्पष्ट रूप से झलकते हैं, जो उन्हें इस सम्मान का सच्चा हकदार बनाते हैं।

वे आधुनिक तमिल साहित्य और भारतीय सिनेमा के उन गिने-चुने नामों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी कलम से न केवल शब्दों को सजाया है, बल्कि समाज के हाशिए पर खड़े लोगों की संवेदनाओं को भी आवाज दी है। 60वें ज्ञानपीठ पुरस्कार (2025) के लिए चुने जाने के बाद, उनका साहित्यिक कद राष्ट्रीय स्तर पर और भी ऊँचा हो गया है।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

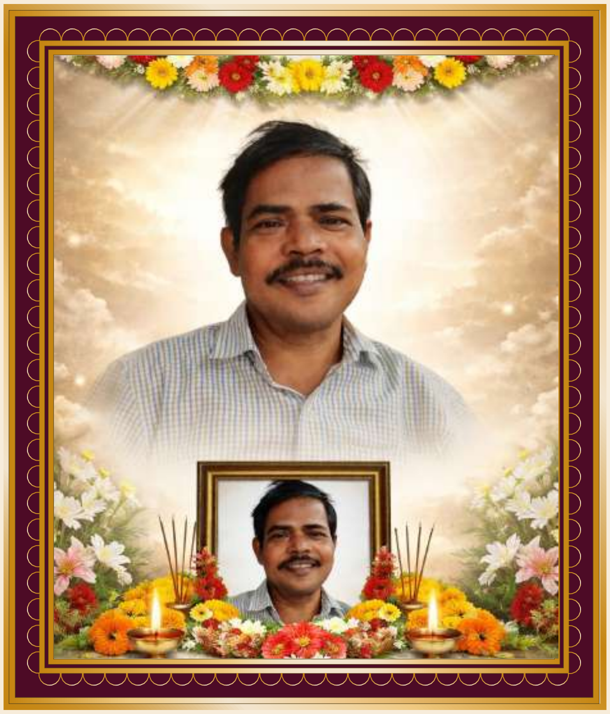

स्व. कुमार महापात्र

(15.01.1974 - 07.02.2026)

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें।
आपका स्नेह, आपका साथ और आपकी मधुर स्मृतियाँ सदैव हमारे हृदय में जीवित रहेंगी।
आपका सरल स्वभाव, मुस्कुराता चेहरा और सबके प्रति अपनापन हमें हमेशा याद आता रहेगा।

आप भले ही हमारे बीच आज नहीं हैं लेकिन आपकी यादें हमेशा हमारे साथ रहेंगी।
ईश्वर से प्रार्थना है कि वे आपको मोक्ष प्रदान करें और आपके परिवार को इस अपार दुख को सहने की शक्ति दें।

ॐ शांति

कार्यालय से संबंधित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक से संबंधित झलकियां

हिंदी कार्यशाला से संबंधित झलकियां

बच्चों के द्वारा चित्रांकन

सुश्री अदिति महान्ति
पुत्री : श्री सत्यनारायण महान्ति,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री आयुष्मान वर्मा
पुत्र- श्री राहुल कुमार वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक